Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 9

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

2 रजब 1441 हिजरी कमरी 27 तब्लीग़ 1399 हिजरी शमसी 27 फरवरी 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ ऐसे हैं कि वे देखने और तजुर्बा की कसौटी पर सम्पूर्ण मेयार वाले साबित हुए। वे सिर्फ़ बातें ही नहीं बल्कि उनकी सदाक़त का सबूत हमारे हाथ में ऐसा ही है जैसे हिंदसा और हिसाब के उसूल सही और यक़ीनी हैं और हम दो और दो चार की तरह उनको साबित कर सकते हैं लेकिन किसी और नबी का अनुयायी ऐसा नहीं कर सकता।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण

सब से सम्पूर्ण नमूना और उदाहरण आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जो समस्त अख़लाक़ में कामिल थे। इसीलिए आपकी शान में फ़रमाया اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अल-क़लम:5) एक वक़्त है कि आप फ़साहत अर्थात वर्णन की उत्तम शैली से एक गिरोह को तस्वीर की तरह हैरान कर रहे हैं। एक वक़्त आता है कि तीर तथा तलवार के मैदान में बढ़कर बहादुरी दिखाते हैं। सख़ावत पर आते हैं तो सोने के पहाड़ बख़्शते हैं। हिलम में अपनी शान दिखाते हैं तो क़त्ल योग्य को छोड़ देते हैं। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बेनज़ीर और कामिल नमूना है जो ख़ुदा तआला ने दिखा दिया है। इस का उदाहरण एक बड़े महान दरख़्त का है जिसके साया में बैठ कर इन्सान उस के हर भाग से अपनी जरूरतों को पूरा कर ले। इस का फल , उस का फूल और इस की छाल , उस के पत्ते सार यह कि हर चीज़ लाभदायक हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस महान दरख़्त की मिसाल हैं जिसका साया ऐसा है करोड़ों मख़लूक़ इस में मुर्ग़ी के परों की तरह आराम और पनाह लेती है। लड़ाई में सबसे बहादुर वह समझा जाता था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास होता था। क्योंकि आप बड़े ख़तरनाक स्थान में होते थे। सुब्हान अल्लाह ! क्या शान है। उहद में देखो कि तलवारों पर तलवारें पड़ती हैं। ऐसी घमसान की जंग हो रही है कि सहाबा रज़ि बर्दाश्त नहीं कर सकते। मगर यह मर्दे मैदान सीना तान कर लड़ रहा है। इस में सहाबा रज़ि का दोष ना था। अल्लाह तआला ने उनको बख़्श दिया , बल्कि इस में भेद ये था कि ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी का नमूना दिखाया जाए। एक अवसर पर तलवार पर तलवार पड़ती थी और आप नबुव्वत का दावा करते थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह में हूँ। कहते हैं हज़रत के माथे पर सत्तर ज़ख़्म लगे। मगर ज़ख़्म हल्के थे। यह ख़लक़ महान था।

एक समय आता है कि आपके पास इस क़दर भीड़ बकरियां थीं कि क़ैसर तथा किसरा के पास भी ना हों। आपने वे सब एक मांगने वाले को बख़श दीं। अब अगर पास ना होता तो क्या बख़्शते। अगर हुकूमत का रंग ना होता तो यह क्योंकर प्रमाणित होता कि आप क़त्ल के योग्य मक्का के कुफ़्फ़ार को बावजूद इंतिक़ाम का सामर्थ्य के बख़श सकते हैं। जिन्हों ने सहाबा किराम रज़ि और ख़ुद हुज़ूर अलैहिस्सलाम और मुसलमान औरतों को सख़्त से सख़्त कष्ट और तकलीफ़ें दी थीं। जब वे सामने आए तो आपने फ़रमाया। لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ मैंने आज तुम को बख़श दिया। अगर ऐसा अवसर ना मिलता तो ऐसे उच्च अख़लाक़ हुज़ूर के कैसे ज़ाहिर होते। यह शान आप की और सिर्फ आपकी ही थी। कोई ऐसा आचरण बतलाओ जो आप में ना हो और फिर क्रम से कामिल तौर पर ना हो।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी को देख कर कहना पड़ता है कि इन के अख़लाक़ बिलकुल छुपे ही रहे। शरारत करने वाले यहूद जिनको गर्वनमैंट के हाँ कुर्सियाँ मिलती थीं और रूमी गर्वनमैंट उनके गिरोह की वजह से इज़्ज़त करती थी। मसीह को तंग करते रहे मगर कोई इक़तिदार का वक़्त हज़रत मसीह की ज़िन्दगी में ऐसा ना आया जिससे मालूम हो जाता कि वे कहाँ तक बावजूद इंतिक़ाम का बदला लेने का क्षमा से काम लेते हैं मगर इस के ख़िलाफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ ऐसे हैं कि वे देखने और तजुर्बा की कसौटी पर सम्पूर्ण मेयार वाले साबित हुए। वे सिर्फ़ बातें ही नहीं बल्कि उनकी सदाक़त का सबूत हमारे हाथ में ऐसा ही है जैसे हिंदसा और हिसाब के उसूल सही और यक़ीनी हैं और हम दो और दो चार की तरह उनको साबित कर सकते हैं लेकिन किसी और नबी का अनुयायी ऐसा नहीं कर सकता। इसी लिए आप का उदाहरण एक ऐसे दरख़्त से दी जिसकी जड़, छाल , फल , फूल पत्ते अत: हर एक चीज़ लाभदायक और बहुत अधिक मुफ़ीद, राहत पहंचाने वाली और आन्नद प्रदान करने वाली है। चूँकि जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उमत में एक फसाद पैदा हो गया इस लिए वे साक्षात अख़लाक़ भी ना रही बल्कि अलग-अलग और मुतफ़र्रिक़ तौर पर वे समस्त अख़लाक़ फैल गए। इसलिए कुछ आदमी कुछ अख़लाक़ को आसानी से अपना सकते हैं।

तज़किया नफ़्स और फ़लाह

इलाही हिदायत तो यह है कि

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۔ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا

(अश्शमस:10,11) नजात पाएगा वो आदमी जिसने तज़किया नफ़्स किया और हलाक हो गया वह आदमी जिसने नफ़्स को बिगाड़ा। फ़लह चीरने को कहते हैं। फ़लाहत खेती को जानते हो। तज़किया नफ़्स में भी फ़लाहत है। मुजाहिदा इन्सानी नफ़्स को इस की ख़राबियों और सख़्तियों से साफ़ कर के इस योग्य बना देता है कि इस में सही ईमान का बीज बोया जाए। फिर वह ईमान का वृक्ष फल लाने के लायक़ बन जाता है। चूँकि आरम्भिक स्तर और मंज़िलों में मुत्तक़ी को बड़ी बड़ी कठिनाइयों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसलिए फ़लाह से ताबीर किया है। दूसरी जगह फ़रमाया है:

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ

(अज़्ज़ारियात:11,12) अल्लाह तआला कुफ़्फ़ार का हाल वर्णन करता है कि सत्यानास हो गया अटकल बाज़ियां करने वालों का जिनके नफ़ूस धोखे में पड़े हुए हैं। गमरह दबाने वाली चीज़ को कहते हैं , जो सिर उठाने ना दे। खेत पर भी ग़मरह पड़ता है , जिसे कुरंड कहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अटकल बाज़ियां करने वालों का सत्यानास हो गया। इभी उनके नफ़ूस ग़मरह में पड़े हुए हैं। मोमिनों

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-4)

वक़्त की ज़रूरत है कि मानव जाति अपने ख़ालिक़ को पहचाने।

सरमाया दाराना निज़ाम अब धीरे-धीरे कमज़ोर हो रहा है और लोग महसूस करने लगे हैं कि इस में ख़तरों और नाइंसाफ़ियां छुपी हैं, इसलिए योरूपी देशों और ताकतवर देशों को अंहकार करते हुए यह नहीं समझना चाहिए कि उनका निज़ाम हमेशा चलता रहेगा बल्कि उन्हें इस बात को यक़ीनी बनाना होगा कि दुनिया का आर्थिक निज़ाम बराबरी और इन्साफ़ के सहारे खड़ा हो।

तारीख़ के इस नाज़ुक मोड़ पर मेरा यह दृढ़ यक़ीन है कि हमारे दौर के बड़ी समस्याओं के ख़ात्मा का सिर्फ एक ही तरीक़ा है

सिर्फ एक ही रास्ता है जो हमें नजात की तरफ़ ले जा सकता है और हमें इस दुनिया में जंग तथा झगड़ों से छुटकारा दिला सकता है और वह रास्ता अल्लाह तआला का है

अमन, ताक़त और माल के द्वारा क़ायम नहीं होता बल्कि अमन तो ख़ुदा तआला की ज़ात में है, अतः यह वक़्त की ज़रूरत है कि मानव जाति अपने ख़ालिक़ को पहचाने

यूं महसूस हुआ कि यह व्यक्ति किसी और दुनिया का है। * आप में अल्लाह तआला की ज़ात आती है।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत ही पर प्रभावित करने वाला था और माहौल पुर अमन था और यूं महसूस हुआ कि यह व्यक्ति किसी और दुनिया का है, हुज़ूर एक पिता की तरह हैं और अपने साथ एक नूर लिए हुए हैं।

आप बहुत ही ज़हीन तथा अक्लमंद और समझदार शख़्सियत हैं, आपके उठने और बैठने से अल्लाह तआला की ज़ात नज़र आती है और इसी तरह आप आने वाले वक़्त के बारे में बहुत ग़ौर करते हैं।

इमाम जमाअत अहमदिया की बातचीत को जो ताक़त उनकी धैर्य वाली और पर प्रभावित करने वाली शख़्सियत से मिलती है वह मैंने और कहीं नहीं देखी,उनका चेहरा उनकी बात की सच्चाई पर दलील था।

उन्होंने दुनिया की लीडर शिप पर स्पष्ट कर किया है कि स्थायी वैश्विक अमन ख़ुदा तआला के भय से संबन्धित है, मैं चाहती हूँ कि आम लोगों से लेकर संस्थाओं के मुखिया और हुकूमती मेम्बर और कॉरपोरेट सैक्टर के फ़ैसला करने वालों तक ये पैग़ाम पहुंचना चाहिए क्योंकि इन्सानियत की व्यापक भलाई के लिए इसका वैश्विक स्तर पर इदराक आम होना बहुत ज़रूरी है।

जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर दिनांक 6 जुलाई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का जर्मन मेहमानों से ख़िताब

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब एक बजकर बीस मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई

इस के बाद मेम्बरात लजना और नास्रात के निम्नलिखित विभिन्न ग्रुपस ने अपनी अपनी भाषाओं में दुआइया नज़्में और तराने पेश किए। अफ्रीकन, अरबी, उर्दू, पंजाबी , जर्मन, इंग्लिश, स्पेनिश, तुर्की, बोसनीयन , मेसीडोनियन, इंडोनेशियन, बंग्ला और जमाएका। इस अवसर पर औरतें ने नारे तकबीर भी बुलंद किए

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कम उमर वाले बच्चों के हाल में तशरीफ़ ले आए। हुज़ूर अनवर की ज़यारत से बच्चों और उनकी माओं की ख़ुशी देखने वाली थी। यहां पर भी नास्रात के ग्रुपस ने दुआइया नज़्में और तराने पेश किए

इसके बाद 1 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला जर्मन और दूसरी विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमानों के साथ एक प्रोग्राम में शामिल के लिए मर्दाना जलसा गाह में पधारे। इन मेहमानों के साथ यह प्रोग्राम कुछ वक़्त पहले से जारी था। इस प्रोग्राम में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 1179 थी। जर्मनी के विभिन्न शहरों से आने वाले मेहमानों की संख्या 502 थी। जबकि जर्मनी के इलावा दूसरे यूरोपियन देशों बुलग़ारिया, मसीडोनिया, माल्टा, अल्बानिया, बूज़नेआ,कोसोवो,हंगरी, क्रोशिया, लेथोनिया, एस्टोनिया, स्लोवेनिया इत्यादि से 341मेहमान शामिल हुए। अरब देशों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमानों की संख्या 157 थी, जबकि अफ्रीक़ा के देशों से आने वाले की संख्या 75 और एशीयन देशों से सम्बन्ध रखने वाले 104 मेहमान शामिल थे। सामूहिक तौर पर 67 क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले लोग इस प्रोग्राम में शामिल हुए। हुज़ूर अनवर के आने के बाद प्रोग्राम आरम्भ हुआ।

साओटोमे ऐंड पर प्रिसंपे (SA TOME and PRINCIPE) देश से प्रधानमन्त्री के प्रतिनिधि URBINO JOSE GONCALVES BOTELHO जलसा जर्मनी में शामिल के लिए आए हुए थे। महोदय ने अपना सम्बोधन पेश करते हुए कहा कि मैं प्रधानमन्त्री की तरफ़ से आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने मुझे इस जलसा में शामिल के लिए दावत दी। प्रधानमन्त्री अफ़सोस का इज़हार करते हैं कि कुछ व्यस्तता के वजह से वह ख़ुद इस जलसा में शामिल न हो सके।

महोदय ने कहा इस तरह मैं प्रधानमन्त्री की तरफ़ से जमाअत अहमदिया जर्मनी को मुबारकबाद पेश करता हूँ कि उन्होंने निहायत शानदार तरीक़ से जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई को आयोजित करने की तौफ़ीक़ पाई। मैं इस भाईचारे पर जो हमने जलसे पर देखा आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ।

मैं बड़ी ख़ुशी और प्रशंसा से जमाअत अहमदिया जर्मनी और ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की ख़िदमतों को सराहता हूँ जो वह हमारे देश के लोगों की आर्थिक और तालीमी और

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने..... फ़रमाया हे इब्न रवाहा अल्लाह तआला तुम को साबित-क़दम रखे।

हिशाम बिन उर्वा ने कहा है कि अल्लाह तआला ने उनको इस दुआ की बरकत से ख़ूब साबित क़दम रखा।

यहां कि आप शहीद हुए और उनके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गए।

मुख़्लिस और वफ़ादार सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन

तीस साल के लगभग फ़ज़ले उम्र हस्पताल में ख़िदमत करने वाले, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, दुआ करने वाले, साबिर शुक्र करने वाले डाक्टर लतीफ़ अहमद क़ुरैशी साहिब की वफ़ात। मरहूम का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के पिता का नाम रवाहा बिन सअलबा था और उनकी माताा का नाम कब्शा बिन्त वाक़िद बिन अमरो था जो अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू हारिस बिन ख़ज़रज से थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि बैअत उक़्बा में शामिल थे और बनू हारिस बिन ख़ज़रज के सरदार थे। उनकी कुनिय्यत अबू मुहम्मद थी कई ने उबू रवाहा और अबू अमरो भी वर्णन की है।

(उसदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 235 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

अन्सार के एक शख़्स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि और हज़रत मिकदाद रज़ि को भाई भाई बनाया था । इब्न सअद के अनुसार आप नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कातिब भी थे

(अल्असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 73 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि जंग बदर, जंग उहद, जंग ख़ंदक़, जंग हुदैबिया, जंग ख़ैबर और अमरतुल कज़ा सहित समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह शरीक रहे। आप जंग मौत-ए-में शहीद हुए। जंग मौत-ए-के सरदारों में से एक सरदार आप भी थे

एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त ख़ुत्बा इरशाद फ़र्मा रहे थे। ख़ुत्बा के दौरान आप ने फ़रमाया बैठ जाओ। यह सुनते ही आप मस्जिद से बाहर जिस जगह खड़े थे वहीं बैठ गए। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा से फ़ारिग़ हुए और यह ख़बर आप को पहुंची तो आप ने उन से फ़रमाया कि

زَادَكَ اللّٰهُ حِرْصًا عَلٰى طَوَاعِيَةِ اللّٰهِ وَطَوَاعِيَةِ رَسُوْلِهٖ

रसूलुल्लाह की इताअत और इस के रसूल की इताअत की ख़ाहिश में अल्लाह तआला तुम्हें ज़्यादा बढ़ाए। इसी तरह की घटना हदीस की किताबों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि के बारे में भी मिलता है और यह घटना उनके हवाले से में एक ख़ुत्बा में वर्णन कर चुका हूँ। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि के बारे में भी यही रिवायत है। वह भी बाहर बैठे थे, जब सुना तो दरवाज़े में बैठ गए और फिर इसी तरह बैठे-बैठे अंदर आए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि जिहाद में सबसे पहले घर से निकलते और सब के बाद लौटते थे। हज़रत अबू दर्दा रज़ि फ़रमाते हैं कि मैं इस दिन से अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूँ जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि का ज़िक्र न करूँ। जब वह सामने से आते हुए मुझ से मिलते तो मेरे सीने पर हाथ रखते अर्थात कि ऐसा था कि हर रोज़ जब भी वह मिलते और रोज़ाना मिलते तो तब भी उनकी बातें ऐसी थीं कि उनका ज़िक्र ज़रूरी है और फिर आगे वर्णन कर रहे हैं कि जब भी वह सामने से आते, मुझे मिलने के लिए आते या मुझे मिलते तो अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि मेरे सीने पर हाथ रखते। हज़रत अबू दर्दा रज़ि कहते हैं और जब वह जाते हुए मुझे मिलते तो मेरे कंधों के बीच में हाथ रखते और मुझसे कहते कि

يَا عُوَيْمِرُ، اِجْلِسْ فَلْنُؤْمِنْ سَاعَةً

कि हे अवैमर बैठो थोड़ी देर ईमान ताज़ा करें। अत: हम बैठते और अल्लाह तआला का ज़िक्र करते जितना अल्लाह तआला चाहता था। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि कहते कि हे अवैमर यह ईमान की मज्लिसें हैं।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ235 -236 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतुस्सहाब: भाग3 पृष्ठ 34 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि दार कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2010 ई)

(सुनन अबी दाऊद किताब अस्सलात बाब अल-इमाम युकल्लमुर रिजाला फ़ी ख़त्बत हदीस 1091)

हज़रत इमाम अहमद की किताब किताबुल ज़हद में वर्णन है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि जब किसी साथी से मिलते तो कहते आओ घड़ी भर अपने रब पर ईमान लाने की याद ताज़ा कर लें। इसी में है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इब्न रवाह रज़ि पर रहम फ़रमाए। उसे ऐसी मज्लिसों से मुहब्बत है जिस पर फ़रिश्ते फ़ख़र करते हैं

हज़रत अबू हुरेरह रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

نِعْمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ رَوَاحَةَ

कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि कितने ही अच्छे आदमी हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि को फ़तह ख़ैबर के बाद फलों और फ़सल इत्यादि का अंदाज़ा लगाने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा था। एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा इतने बीमार हुए कि बेहोश हो गए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी इयादत करने के लिए आए। फ़रमाया हे अल्लाह तआला अगर इस की मुक़द्दर घड़ी, उस की निर्धारित घड़ी का वक़्त हो गया है तो उस के लिए आसानी पैदा कर दे। अर्थात अगर उस की वफ़ात का वक़्त है तो आसानी पैदा कर दे और अगर उस का मौऊद समय नहीं हुआ तो उसे शिफ़ा प्रदान फ़र्मा। इस दुआ के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के बुख़ार में कुछ कमी हुई, उन्होंने कमी महसूस की तो उन्होंने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी माता कह रही थी कि हाय मेरा पहाड़। हाय मेरा सहारा। जब मैं बीमार था तो मैं ने देखा कि एक फ़रिश्ता लोहे का डण्डा उठाए खड़ा यह कह रहा था कि क्या तुम वास्तव में ऐसे हो? तो मैंने कहा हाँ। जिस पर उसने मुझे वह डण्डा मारा।

एक और रिवायत इस बारे में इस तरह है और यह ज़्यादा सही लगती है। कहते हैं कि फ़रिश्ते ने लोहे का एक डण्डा उठाया हुआ था और वह मुझ से पूछ रहा था कि क्या तुम ऐसे हो जिस तरह तुम्हारी माँ कह रही है। कि तुम पहाड़ हो और मेरे सहारे हो ?यह तो शिर्क वाली बात बनती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि कहते हैं कि अगर मैं कहता कि हाँ में ऐसा हूँ तो वह ज़रूर मुझे डण्डा मार देता

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 417 अब्दुल्लाह बिन रवाहा, दारुल फिक्र 2012 ई)

आप शायर भी थे और उन शायरों में से थे जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मुख़ालिफ़ीन की बकवास का जवाब दिया करते थे। उनमें से कुछ शेअर ये हैं

إِنِّي تَفَرَّسْتُ فِيكَ الْخَيْرَ أَعْرِفُهُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ أَنْ مَا خَانَنِي الْبَصَرُ
أَنْتَ النَّبِيُّ وَمَنْ يُحْرَمْ شَفَاعَتَهُ يَوْمَ الْحِسَابِ فَقَدْ أَزْرَى بِهِ الْقَدَرُ
فَثَبَّتَ اللّٰهُ مَا آتَاكَ مِنْ حَسَنٍ تَثْبِيتَ مُوْسٰى وَنَصْرًا كَالَّذِي نُصِرُوْا

कि मैंने आप की ज़ात मुक़द्दस में अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात में भलाई पहचान ली थी और अल्लाह तआला जानता है कि मेरी नज़र ने धोखा नहीं खाया। आप नबी हैं। क़यामत के दिन जो शख़्स आप की शफ़ाअत से महरूम कर दिया गया बेशक क़ज़ा क़दर ने इस को अपमानित कर दिया। अत: अल्लाह तआला इन ख़ूबियों पर दृढ़ता प्रदान करे जो उसने आप को दी हैं जिस तरह मूसा अलैहिस्सालम को दृढ़ रखा और आप की मदद करे जैसा कि इन नबियों की मदद की।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन अशआर को सुनकर फ़रमाया कि हे इब्न रवाहा अल्लाह तआला तुम को दृढ़ता प्रदान रखे। हिशाम बिन उर्वा ने कहा है कि अल्लाह तआला ने उनको इस दुआ की बरकत से ख़ूब दृढ़ रखा यहां तक कि आप शहीद हुए और उनके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गए। इस में शहीद हो कर दाख़िल हुए।

इब्ने सअद की रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई कि

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ

(अश्शुअरा 225) और रहे शायर तो केवल भटके हुए ही उनकी पैरवी करते हैं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि कहने लगे कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं इन्ही में से हूँ। जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

اِلَّا الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

(अश्शुअरा 228) सिवाए उनके जो उनमें से ईमान लाए और नेक कर्म किए। मुअज्जमुश्शुअरा के लेखक लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि ज़माना जाहिलियत में भी बहुत सम्मान रखते थे और ज़माना इस्लाम में भी उनको बहुत बुलन्द स्थान और मरतबा प्राप्त था। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में एक शेअर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि ने ऐसा कहा है कि उसे आप का बेहतरीन शेअर कहा जा सकता है। वह शेअर आप की दिली अवस्था को ख़ूब वर्णन करता है जिस में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा

لَوْلَمْ تَكُنْ فِيْهِ اٰيَاتٌ مُبَيِّنَةٌ كَانَتْ بَدِيْهَتُهُ تُنْبِيْكَ بِالْخَبَرِ

कि अगर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात के बारे में खुले खुले निशान और रोशन चमत्कार न भी होते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात ही हक़ीक़त को जानने के लिए के लिए काफ़ी है।

(अल्असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्न हज्र असकलानी भाग 4 पृष्ठ 72 से 75 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

(उसदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 236 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2008 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 401 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि जाहिलियत के ज़माना में लिखना पढ़ना जानते थे हालाँकि इस ज़माने में अरब में लिखना बहुत कम थी। जंग बदर के समापन पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि को मदीने की तरफ़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि को अवाली की तरफ विजय की खुशखबरी सुनाने के लिए बदर के मैदान से रवाना फ़रमाया। अवाली मदीना के ऊंची तरफ वह इलाक़ा है जो चार मील से लेकर आठ मील के मध्य है। इस में क़बा की बस्ती और कुछ अन्य क़बीले रहते हैं, उसे कहते हैं । हज़रत सईद बिन जबेर रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद हराम में ऊंट पर दाख़िल हुए। आप सोटी से हज्रे असवद को चूम्बन दे रहे थे। आप के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि भी थे जो आप की ऊंटनी की नकेल पकड़े हुए थे और यह अशआर कह रहे थे कि

خَلُّوْا بَنِي الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيْلِهٖ
نَحْنُ ضَرَبْنَاكُمْ عَلٰى تَأْوِيْلِهٖ
ضَرْبًا يُّزِيْلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيْلِهٖ

कि हे कुफ़्फ़ार आप के रास्ते से हट जाओ हम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रुजू करने पर तुम्हें ऐसी मार मारी जो सिरों को आराम के स्थान से हटा दे।

हज़रत क़ैस बिन अबू हाज़िम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि से फ़रमाया कि उतरो और हमारे ऊंटों को हरकत दो अर्थात कुछ शेअर कह कर ऊंटों को तेज़ करो जिसे हुदी कहते हैं। निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मैं ने यह कलाम छोड़ दिया है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा सुनो और इताअत करो। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ये अशआर कहते हुए अपने ऊंट से उतरे कि

يَا رَبِّ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْأَقْدَامَ إِنْ لَاقَيْنَا
إِنَّ الْكُفَّارَ قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا

कि हे परवरदिगार अगर तू न होता तो हम लोग हिदायत न पाते। न तो सदक़ा तथा ख़ैरात करते। न नमाज़ पढ़ते। हम पर सुकून तथा सन्तोष नाज़िल फ़र्मा और जब हम दुश्मन का मुक़ाबला करें तो हमारे क़दम साबित रख क्योंकि कुफ़्फ़ार हम पर हमला कर रहे हैं। वकीअ ने कहा कि दूसरे रावी ने इतना और इज़ाफ़ा किया था कि

وَإِنْ أَرَادُوْا فِتْنَةً أَبَيْنَا

कि अगर वे फ़ित्ना तथा फ़साद बरपा करना चाहें तो हम इनकार करते हैं। अर्थात इस फ़ित्ना और फ़साद का रोक करते हैं और उसे बरपा नहीं होने देते। रावी ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अल्लाह तआला इन पर रहमत कर। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि वाजिब हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ ही से यह रहमत तो वाजिब हो गई

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए तो आपके लिए अपने बिस्तर से न उठ सके। आप ने फ़रमाया कि तुम जानते हो कि मेरी उम्मत के शहीद कौन हैं? लोगों ने निवेदन किया की। मुस्लमान का क़त्ल होना शहादत है। फ़रमाया तब तो मेरी उम्मत के शहीद कम हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुस्लमान का क़त्ल होना शहादत है और पेट की बीमारी से फ़ौत होना शहादत है और पानी में डूब कर फ़ौत होना शहादत है और वह औरत जिसकी ज़चगी में वफ़ात हो जाती है यह सब शहादत की किस्में हैं

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 398 से 400 अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(मोअज्जमुल बुलदान भाग 4 पृष्ठ187)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ13 बाब ग़ज़वा बदर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अरवह बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग मौत में हज़रत ज़ैद बिन हारिसह रज़ि को सरदार लश्कर बनाया और फ़रमाया कि अगर यह शहीद हो जाएं तो हज़रत जाफ़िर बिन अबू तालिब रज़ि उनकी जगह पर हों। फिर अगर हज़रत जाफ़िर रज़ि भी शहीद हो जाएं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि सरदार बनें। अगर अब्दुल्लाह रज़ि भी शहीद हों तो मुस्लमान जिसको पसंद करें उस को अपना सरदार बना लें। अत: जब लश्कर तैयार हो गया और लश्कर वाले कूच करने लगे तो लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सरदारों को रुख़स्त किया और उनको सलामती की दुआ दी। जब लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सरदारों को और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि को रुख़स्त किया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि रोने लगे। लोगों ने रोने का कारण पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह की कसम मुझे दुनिया की मुहब्बत और इस की शदीद इच्छा और शौक़ नहीं है बल्कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह आयत पढ़ते सुना है कि

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا

(मर्यम 72) कि और तुम में से कोई नहीं मगर वह ज़रूर इस में जाने वाला है अर्थात दोज़ख़ में। यह तेरे रब पर एक तय शुदा फ़ैसले के तौर पर फ़र्ज़ है। अत: मैं नहीं जानता कि पिल सिरात चढ़ने और पार उतरने में मेरा क्या हाल होगा। इस से पहले की आयत में दोज़ख़ का ज़िक्र है। इसलिए उनको ख़ौफ़ पैदा हुआ था वर्ना दूसरी आयात में साफ़ ज़ाहिर है कि मोमिन और अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वालों के बारे में यह ज़िक्र नहीं है। बहरहाल मुस्लमानों ने कहा कि अल्लाह

तआला तुम्हारे साथ है। वही तुम को हम तक ख़ैर तथा ख़ूबी से वापस लाएगा।

तफ़सीर सग़ीर के हाशिए में लिखा है और तफ़सीर कबीर में दोनों तरह है कि एक तो यह मोमिनों के लिए नहीं है काफ़िरों के लिए है लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने और हदीसों से इस बारे में व्याख्या भी फ़रमाई है जिसका सार यह है जो तफ़सीर सग़ीर के हाशिए में भी लिखा है कि "क़ुरआन मजीद से मालूम होता है कि दोज़ख़ें दो हैं। एक इस दुनिया की, एक अगले जहान की। यह जो फ़रमाया है कि हर एक शख़्स दोज़ख़ में जाएगा इस से यह अभिप्राय नहीं कि मोमिन भी दोज़ख़ में जाऐंगे। बल्कि यह अभिप्राय है कि मोमिन दोज़ख़ का हिस्सा इसी दुनिया में पा लेते हैं। अर्थात कुफ़्फ़ार उन्हें किस्म किस्म की तकलीफ़ें देते हैं। वर्ना मोमिन क़ुरआन मजीद की दृष्टि से अगले जहान में दोज़ख़ में कभी नहीं जाऐंगे। क्योंकि क़ुरआन मजीद मोमिनों के बारे में फ़रमाता है कि لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا अर्थात मोमिन दोज़ख़ से इतने दूर रहेंगे कि वे उस की आवाज़ भी नहीं सुन सकेंगे। अत: मोमिनों के दोज़ख़ में जाने से अभिप्राय उनका दुनिया में तकलीफ़ें उठाना है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुख़ार को भी एक किस्म का दोज़ख़ क़रार दिया है। फ़रमाया اَلْحُمّٰى حَظُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ مِنَ النَّارِ अर्थात बुख़ार दोज़ख़ की आग का मोमिन के लिए एक हिस्सा है।

(तफ़सीर सग़ीर आयत मर्यम 72)

बहरहाल यह उस की थोड़ा सा विवरण है और जो विदा किया मुस्लमानों ने, मोमिनों ने उन्हें कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें दुश्मनों की बुराई से बचाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने इस वक़्त ये अशआर पढ़े कि

لَكِنَّنِيْ اَسْأَلُ الرَّحْمَانَ مَغْفِرَةً وَضَرْبَةً ذَاتَ فَرْغٍ يَقْذِفُ الزَّبَدَا
اَوْ طَعْنَةً بِيَدَيْ حَرَّانَ مُجْهِزَةً بِحَرْبَةٍ تُنْفِذُ الْاَحْشَاءَ وَالْكَبِدَا
حَتّٰى يَقُوْلُوْا اِذَا مَرُّوْا عَلٰى جَدَثِيْ يَا اَرْشَدَ اللّٰهُ مِنْ غَازٍ وَقَدْ رَشَدَا

लेकिन मैं ख़ुदाए रहमान से मग़फ़िरत तलब करता हूँ और तलवारों का ऐसा वार करने की तौफ़ीक़ मांगता हूँ जो खुले घाव वाला हो और ताज़ा ख़ून निकालने वाला हो जिसमें झाग उठ रही हो और भाले का ऐसा हमला जो पूरी तैयारी से ख़ून के बहुत प्यासे के हाथों से किया गया हो जो अंतड़ियों और जिगर के पार हो जाए यहां तक कि जब लोग मेरी क़ब्र के पास से गुज़रें तो कहीं कि हे जंग में शामिल होने वाले अल्लाह तआला तेरा भला करे और इस ख़ुदा ने भला कर दिया हो।

फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको विदा किया। लश्कर ने कूच किया यहां तक कि मआन स्थान पर पड़ाव किया। मआन सूरिया देश में हिजाज़ की तरफ बलका के किनारे एक शहर है। वहां जा कर मालूम हुआ कि हिरक़्ल एक लाख रूमी और एक लाख अरबी फ़ौज के साथ माआब स्थान पर मौजूद है। माआब भी सीरिया में बलका के आसपास एक शहर है। मुस्लमानों ने दो दिन मआन में पड़ाव किया और आपस में कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास किसी को भेज कर अपने दुश्मन की अधिकता से ख़बर दें। अर्थात कि दुश्मन बहुत बड़ी संख्या में है या तो आप हमारी मदद करेंगे या कुछ और हुक्म देंगे। मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि ने मुस्लमानों को जोश दिलाया। अत: वे लोग बावजूद के तीन हज़ार थे आगे बढ़े और रोमियों से बलका की एक बस्ती मशारफ़ के क़रीब जा मिले। मशारफ़, सीरिया में इस नाम की कई बस्तीयां थीं जिसमें एक हौरान शहर के पास है, एक दमिशक़ के क़रीब, एक बलिका-ए-के क़रीब है। फिर मुस्लमान वहां से मौता की तरफ़ हट आए

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ237 अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

(तफ़सीर सग़ीर सूर मर्यम आयत 72 पृष्ठ390)

(उसदुल ग़ाबह (अनुवादक हिस्सा 5 पृष्ठ 247 प्रकाशन अलमीज़ान उर्दू बाज़ार लाहौर) (मोअज्जमुल बुलदान भाग 5 पृष्ठ179, 37, 153-154)

हज़रत अनस रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ि, हज़रत जाफ़िर रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि के शहीद हो जाने की ख़बर लोगों को सुनाई। इस से पहले इस के कि इन तक उस की कोई ख़बर नहीं आई थी। आप ने पहले बता दिया। आप ने फ़रमाया ज़ैद रज़ि ने झंडा लिया और वह शहीद हुए। फिर जाफ़िर रज़ि ने लिया और वह भी शहीद हुए। फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ने लिया वह भी शहीद हुए और आप की आँखों से आँसू जारी थे। फ़रमाया फिर झंडा अल्लाह तआला की तलवारों में से एक तलवार ने लिया। आख़िर अल्लाह तआला ने इस के द्वारा फ़तह दी

(सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा मौता मन अर्ज़लि शाम हदीस 4262)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि, हज़रत जाफ़िर रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि की शहादत की ख़बर पहुंची तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनका हाल वर्णन करने के लिए खड़े हुए और हज़रत ज़ैद रज़ि के ज़िक्र से आरम्भ फ़रमाया। आप ने फ़रमाया

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِزَيْدٍ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِزَيْدٍ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِزَيْدٍ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِجَعْفَرٍ وَ لِعَبْدِ اللّٰهِ ابْنِ رَوَاحَةَ

कि हे अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़र्मा। हे अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़र्मा। हे अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़र्मा। हे अल्लाह जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की मग़फ़िरत फ़र्मा

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 34 ज़ैद अलहुब्ब बिन हारसा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि जब हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि, हज़रत जाफ़र रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि शहीद हो गए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठ गए। आप के चेहरे से गुम तथा दुख का इज़हार हो रहा था

(सुनन अबी दाऊद किताबुल जनायज़ बाब अलजलूस इन्दल मुसीबत हदीस 3122)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जंग मौत का ज़िक्र करते हुए इस तरह फ़रमाया है। यह पहले हज़रत ज़ैद के अन्तर्गत भी ज़िक्र हो चुका है। लेकिन बहरहाल थोड़ा सा हिस्सा दुबारा पेश करता हूँ। आप लिखते हैं कि

"इस का अफ़्सर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन्ही ज़ैद रज़ि को निर्धारित किया था मगर साथ ही यह इरशाद फ़रमाया कि मैं इस वक़्त ज़ैद को लश्कर का सरदार बनाता हूँ। अगर ज़ैद लड़ाई में मारे जाएं तो उनकी जगह जाफ़र रज़ि लश्कर की कमान करें। अगर वह भी मारे जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि कमान करें। अगर वह भी मारे जाएं तो फिर जिस पर मुस्लमान सहमत हों वह फ़ौज की कमान करे। जिस वक़्त आप ने यह इरशाद फ़रमाया उस वक़्त एक यहूदी भी आप के पास बैठा हुआ था। उसने कहा कि मैं आप को नबी तो नहीं मानता लेकिन अगर आप सच्चे भी हों तो उन तीनों में से कोई भी ज़िन्दा बच कर नहीं आएगा क्योंकि नबी के मुँह से जो बात निकलती है वह पूरी हो कर रहती है। वह यहूदी हज़रत ज़ैद रज़ि के पास गया और उन्हें बताया कि अगर तुम्हारा रसूल सच्चा है तो तुम ज़िन्दा वापस नहीं आओगे। हज़रत ज़ैद रज़ि ने फ़रमाया मैं ज़िन्दा आऊँगा या नहीं आऊँगा उस को तो अल्लाह तआला ही जाने मगर हमारा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़रूर सच्चा है। अर्थात न मानते हुए भी यहूदी इस बात पर यक़ीन रखता था कि आप की बात पूरी होगी लेकिन फिर भी जिन्होंने नहीं मानना उन लोगों की ज़िद होती है। आप लिखते हैं कि "अल्लाह तआला की हिक्मत है कि यह घटना बिलकुल इसी तरह पूरी हुई। पहले हज़रत ज़ैद रज़ि शहीद हुए। उनके बाद हज़रत जाफ़िर रज़ि ने लश्कर की कमान संभाली वह भी शहीद हो गए और उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ने लश्कर की कमान संभाली लेकिन वह भी मारे गए और क़रीब था कि लश्कर में भगदड़ पैदा हो जाती कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने कई मुस्लमानों के कहने से झंडे को अपने हाथ में पकड़ लिया। अल्लाह तआला ने उनके द्वारा मुस्लमानों को फ़तह दी और वह ख़ैरीयत से लश्कर को वापस ले आए।"

(फ़रीज़ा तब्लीग़ और अहमदी ख़वातीन, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 405-406)

यह घटना जो मैं अब वर्णन करने लगा हूँ, यह पहले भी वर्णन हो चुका हूं लेकिन इस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि के इख़लास तथा वफ़ादारी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का इज़हार और इस्लाम से मुहब्बत का इज़हार होता है। इसलिए यह यहां वर्णन करना ज़रूरी है।

हज़रत उर्वा से रिवायत है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि ने उन्हें बताया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुए जिस पर पालान था और इस के पीछे फ़िदक के इलाक़े की चादर थी। आप ने अपने पीछे उसामा को बिठाया हुआ था। आप हज़रत साद बिन अबादह रज़ि की इयादत के लिए बनू हारस बिन ख़ज़रज क़बीला में तशरीफ़ ले गए। यह बदर की घटना से पहले की बात है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मज्लिस के पास से गुज़रे जिसमें मुस्लमान और मुशरकीन और यहूद मिले जले बैठे थे। उन में अब्दुल्लाह बिन उबी भी था और इस

मज्लिस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि भी थे। जब मज्लिस में सवारी की धूल पहुंची तो अब्दुल्लाह बिन अबी ने अपनी नाक अपनी चादर से ढांक ली। फिर कहने लगा कि हम पर गर्द ना उड़ाओ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा फिर ठहरे और सवारी से उतरे और उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया और उन पर क़ुरआन पढ़ा। अब्दुल्लाह बिन अबी कहने लगा कि हे शख़्स यह अच्छी बात नहीं। जो तुम कहते हो अगर वह सच है तो हमारी मज्लिसों में हमें तकलीफ़ न दो और अपने डेरे की तरफ़ लौट जाओ और जो तुम्हारे पास आए उस के पास वर्णन करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ने फ़ौरन निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह आप हमारी मज्लिसों में तशरीफ़ लाया करें। हम यह पसन्द करते हैं। और इस वक़्त उन्होंने कोई ख़ौफ़ नहीं खाया और किसी की कोई परवाह नहीं की। बाद में वहां झगड़ा भी हुआ लेकिन बहरहाल उनका अपना एक किरदार था।

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद अलयसीर बाब फ़ी दुआ नबी इल्लाह तआला ..हदीस 1798)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मुहिम में सहाबा को भेजा जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि भी शामिल थे। जुम्अ: का दिन था। मुहिम में शामिल बाक़ी सहाबी तो रवाना हो गए उन्होंने कहा , अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ने कहा कि पीछे रह कर जुम्अ: की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अदा कर के मैं उनसे जा मिलूँगा। फिर जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे तो आप ने उन्हें देखकर फ़रमाया तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों के साथ रवाना होने से रोक दिया? उन्होंने निवेदन की कि मेरी ख़ाहिश थी कि मैं आप के साथ नमाज़ जुम्अ: अदा करूँ फिर उनसे जा मिलूं। हज़ूर ने फ़रमाया कि ज़मीन में जो कुछ है अगर तुम वह सब ख़र्च कर डालो तो जो लोग मुहिम पर रवाना हो गए हैं तुम उनके फ़ज़ल को नहीं पा सकते।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबबुल जमा बाब मा जाअ फिस्सफरे यौमुल हदीस 527)

इसलिए फ़रमाया कि जो मुहिम मैं ने रवाना की है इस की इस वक़्त-ए-नमाज़ जुमा से ज़्यादा एहमीयत है। रास्ते में तुम लोग पढ़ सकते थे

हज़रत अबू दर्दा रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रमज़ान के महीने में बहुत गर्मी में निकले और गर्मी इतनी अधिक थी कि हम में से हर कोई सिरों को गर्मी से बचाने के लिए हाथों से ढाँपता था और हम में कोई रोज़ादार नहीं था सिवाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि के।

(सही मुस्लिम किताबुस्याम बाब अलतख़ैर फ़िस्सौम फ़ितर फ़ी अलसफ़र हदीस 1122)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने तहरीर फ़रमाया है कि' मदीना के निवास का सबसे पहला काम मस्जिद नबवी को बनाना का था। जिस जगह आप की ऊंटनी आकर बैठी थी वह मदीना के दो मुस्लमान बच्चों सहल और सुहेल की मि-ल्कियत थी जो हज़रत असद बिन ज़रारा रज़ की निगरानी में रहते थे। यह एक वीरान जगह थी जिसके एक हिस्सा में कहीं कहीं ख़जूरों के दरख़्त थे और दूसरे हिस्से में कुछ खन्डर इत्यादि थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मस्जिद और अपने कमरों को बनाने के लिए पसन्द फ़रमाया और दस दीनार अर्थात क़रीब नव्वे रुपए में यह ज़मीन ख़रीद ली गई और जगह को बराबर कर के और दरख़्तों को काट कर मस्जिद नबवी बनानी शुरू हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद दुआ मांगते हुए बुनियाद रखी और जैसा कि क़बा की मस्जिद में हुआ था सहाबा रज़ि ने मज़दूरों और काम करने वालों की तरह काम किया जिसमें कभी कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भी शिरकत फ़रमाते थे। की बार ईंटें उठाते हुए सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि अन्सारी का यह शेअर पढ़ते थे

هٰذَا الْحِمَالُ لَا حِمَالُ خَيْبَرَ هٰذَا أَبَرُّ رَبَّنَا وَأَطْهَرُ

अर्थात यह बोझ ख़ैबर के तिजारती माल का बोझ नहीं है जो जानवरों पर लद कर आया करता है बल्कि हे हमारे मौला यह बोझ तक़्वा और तहारत का बोझ है जो हम तेरी प्रसन्नता के लिए उठाते हैं। और कभी कभी सहाबा काम करते हुए अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि का यह शेअर पढ़ते थे

اَللّٰهُمَّ إِنَّ الْأَجْرَ أَجْرُ الْآخِرَهْ فَارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ

अर्थात हे हमारे अल्लाह तआला असल बदला तो सिर्फ आख़िरत का बदला है। अत: तू अपने फ़ज़ल से अन्सार तथा मुहाजिरीन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। जब सहाबा रज़ि ये अशआर पढ़ते थे तो कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनकी आवाज़ के साथ आवाज़ मिला देते थे और इस तरह एक लंबे अर्से की मेहनत के बाद यह मस्जिद सम्पूर्ण हुई।

(सीरत ख़ातमन्निबय्यीन पृष्ठ 269 से 270)

यह ज़िक्र हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा का है और क्योंकि एक जनाज़ा भी मैं ने पढ़ाना है और मरहूम का ज़िक्र भी करना है। इसलिए आज एक सहाबी का ही ज़िक्र कर रहा हूँ।

अब जैसा कि मैं ने कहा कि एक मरहूम का वर्णन करना है। यह हमारे आदरणीय डाक्टर लतीफ़ अहमद क़ुरैशी साहिब हैं जो मन्ज़ूर अहमद क़ुरैशी साहिब के बेटे थे।19 जनवरी 2020 ई को दोपहर एक बजे के क़रीब अपने घर में लगभग 80 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आप मूसी थे। अजमेर शरीफ़ इंडिया में पैदा हुए थे और1937 ई में उनके पिता मन्ज़ूर क़ुरैशी साहिब ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के हाथ पर बैअत की थी। उनकी माता आदरणीया मन्सूरा बुशरा साहिबा हैं। वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मुंशी फ़य्याज़ अली साहिब कपूरथलवी साहिब रज़ि की नवासी और हज़रत शैख़ अब्दुर्रशीद मेरठी रज़ि की पोती हैं। वग अभी जीवित ही हैं। आदरणीय डाक्टर क़ुरैशी साहिब के माता पिता पाकिस्तान बनने के समय हिजरत कर के लाहौर आ गए थे। यहीं उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। इस में अच्छी पहली पोज़ीशन ली। फिर किंग ऐडवर्ड मैडीकल कॉलेज में दाख़िल हुए और इस वक़्त के सबसे छोटी उम्र के छात्र थे जिन्होंने ऐम बी-बी ऐस किया। वहां के प्रिंसिपल ने खासतौर पर इस का वर्णन किया।1961 ई में फिर यह और अधिक शिक्षा लिए इंग्लिस्तान आ गए और यहां पहले बच्चों की बीमारियों में डिप्लोमा किया। फिर ऐम आर सी पी की डिग्री हासिल की। फिर यूवल (Yeovil)स्विमर सीट Somerset)मैं कन्सलटैंट की जॉब उनको मिल गई। वहां ख़ुसूसीयत के साथ दिल के बीमारी में महारत हासिल की।1968 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने डाक्टर साहिब को फ़रमाया कि आप हमारे पास कब आ रहे हैं? तो डाक्टर साहिब ने फ़रमाया जब आप हुक्म दें। अत: आप ने कहा आप आ जाएं। अत: इंग्लिस्तान तर्क कर के रब्वह मुंतक़िल हो गए और फ़ज़ल उम्र हस्पताल रब्वह में डाक्टर साहिब का तक़र्रुर हुआ और फिर यह लंबा अरसा वहां काम करते रहे।11 जुलाई 1983 ई बतौर चीफ़ मैडीकल ऑफीसर फ़ज़ल उम्र हस्पताल मुक़र्रर हुए और 1987 ई तक इस ख़िदमत पर मामूर रहे। साठ साल की उम्र तक फ़ज़ल उम्र हस्पताल की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे।20 अगस्त 1998 ई को रिटायर्ड हुए। 6 सितम्बर 1998 ई को दोबारा फ़ज़ले उम्र हस्पताल ज्वाइन कर लिया और 10 सितम्बर 2000 ई तक अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आपको फ़ज़ल उम्र हस्पताल में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस तरह फ़ज़ल उम्र हस्पताल में उनकी ख़िदमत का समय लगभग तीस साल पर फैला है। डाक्टर लतीफ़ क़ुरैशी साहिब इलावा उस के कि वाकिफ ज़िंदगी डाक्टर रहे, ख़ुद्दामुल अहमिदया मर्कज़िया, अन्सारुल्लाह मर्कज़िया में भी विभिन्न ओहदों पर उनको काम करने की तौफ़ीक़ मिली। आजकल भी रुकन ख़ुसूसी अन्सारुल्लाह थे। इस अर्से में दो साल यह मजलिस इफ्ता के मैंबर

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

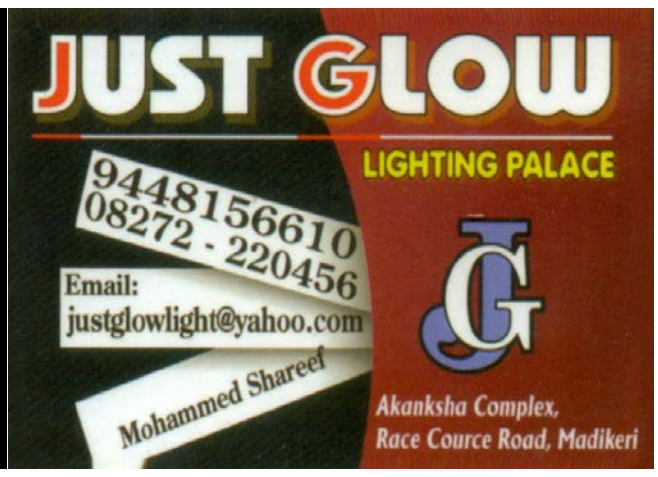

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

भी रहे। उन्होंने दो किताबें भी लिखें जो खासतौर पर पाकिस्तान के लोगों के लिए थीं। हिफ़्ज़ान सेहत के उसूल और healthy living उनकी पत्नी भी कुछ दिन पहले फ़ौत हुई थीं और उनका ज़िक्र मैंने किया था। वह मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहिब की बेटी थीं। पिछले जुम्अ: उनका भी जनाज़ा मैं ने पढ़ाया था । इस से दो दिन बाद और उनकी वफ़ात के कोई पंद्रह दिन बाद उनकी भी वफ़ात हो गई। उनके वारिसों में भी जैसा कि मैंने उनकी अहलिया के ज़िक्र में भी ज़िक्र किया था कि तीन बेटे और दो बेटियां हैं। उनके बेटे डाक्टर अताउल मालिक कहते हैं कि जब से मैंने होश सँभाला है पिता जी ने कभी तहज्जुद की नमाज़ नहीं तर्क की। इसी तरह हमारी माता हमें बताती थीं कि शादी के पहले दिन से तहज्जुद की नमाज़ बाक़ायदगी से पढ़ते थे। अत: लगभग पच्चास साल से ज़ाइद समय तक रोज़ाना निरन्तर तहज्जुद पढ़ते थे । अम्मी की आख़िरी बीमारी में भी जबकि पिता जी बहुत मेहनत से उनकी सेहत का ख़्याल रखते थे और डायलेसज़ (dialysis)करवाने के लिए हस्पताल भी ले जाना होता था। और वहां भी कई कई घंटे बैठना होता था। बे आरामी भी थी लेकिन इस के बावजूद कभी तहज्जुद नहीं छोड़ी। मरीज़ों से इंतिहाई हमदर्दी से व्यवहार करते थे। ग़रीबों का ध्यान रखते थे। दूर दूर से ग़रीब मरीज़ आपके पास आते, दवाई लेते और शिफ़ा पाते। कई मरीज़ों से फ़ीस भी ना लेते। कई बार अपने पास से मदद कर देते। हमेशा नसीहत करते कि शिफ़ा अल्लाह तआला के हाथ में है और अपने तीन बच्चों को जो डाक्टर हैं उन्हें खासतौर पर बार-बार इस बात की यक़ीन दहानी कराते थे कि हमेशा अपने मरीज़ों के लिए दुआ में व्यस्त रहो। उनके बेटे कहते हैं। कई बार मैं अपने पिता जी को अपने मरीज़ों के लिए दुआ के लिए कहता तो अगले दिन फिर वह फ़ोन कर के पूछते कि मरीज़ का क्या हाल है? मैंने दुआ की है

1969 ई में जबकि इंग्लिस्तान में कन्सलटैंट का काम करते थे सारे दुनियावी लाभों और पैसों को छोड़कर अल्लाह तआला पर तवक्कुल करते हुए रब्वह आए और अल्लाह तआला की ज़ात पर कामिल यक़ीन था कि समस्त दुनियावी और दीनी काम ख़ुद बनाएगा और बच्चे भी उच्च सिक्षा हासिल करेंगे। अत: अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और कभी माली तंगी नहीं आई और बच्चों ने उच्च शिक्षा भी हासिल की। उनके तीनों बच्चे जो डाक्टर हैं। वह भी आजकल अक्सर अमरीका में हैं। अपने माता पिता की बहुत ख़िदमत करते थे। आख़िर वक़्त तक माता को ख़ुद खाना देते रहे और ख़ास ख़्याल रखते रहे। मैंने बताया है नाँ कि उनकी माता अभी जीवित हैं। उनके पास ही थीं। फिर उनके बेटे कहते हैं कि मेरे अमरीका जाने में, परीक्षाओं की तैयारी इत्यादि में मेरी बड़ी मदद की। हम बच्चों की बड़ी हौसला-अफ़ज़ाई किया करते थे। दिखावे से सख़्त नफ़रत करते थे। हमेशा सादा तरीक़ पर ज़िन्दगी गुज़ारी और हर छोटे और बड़े काम से पहले ख़लीफ़ा वक़्त की ख़िदमत में दुआ का ख़त लिखते थे और मश्वरा करते थे

और उनके दूसरे बेटे डाक्टर मुहम्मद अहमद महमूद क़ुरैशी हैं। कहते हैं कि ख़लीफ़ा सालिस ने उनके बारे में फ़रमाया था कि यह सिर्फ़ डाक्टर ही नहीं हैं बल्कि दुआ करने वाले डाक्टर हैं। हर मरीज़ के लिए दुआ करते। हर पर्ची पर दवाई लिखने से पहले 'बिसमिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम लिखते और फिर उस के नीचे 'हुव्श्शाफी लिखते और इसी तरह दूसरे डाक्टरों को नसीहत करते थे कि मरीज़ों के लिए दुआ किया करो क्योंकि असल शिफ़ा अल्लाह तआला के हाथ में है। अब आख़िरी यह कहते हैं कि मेरी माता की वफ़ात के बाद शोर कोट से एक मरीज़ आया तो उस वक़्त भी कहीं जा रहे थे, गाड़ी में बैठे हुए थे। गाड़ी से उतर कर मरीज़ को देखा और उनको नुस्ख़ा लिख कर दिया।और अक्सर मरीज़ों को अपनी जेब से दवाई ख़रीद के देते थे। उनकी बेटी कहती हैं कि एक औरत ने मुझे बताया कि उनके पिता को हार्ट-अटैक हुआ तो वह घर में अकेले थे अर्थात उस औरत के पिता तो उन्होंने घर जा के मरीज़ को देखा , बच्चों को फ़ोन किया और जब तक उनके बच्चे घर नहीं आ गए उस वक़्त तक उनको छोड़ा नहीं। मरीज़ के पास बैठे रहे। हर साल बड़ी तैय्यारी से से इंग्लिस्तान और कादियान के जलसे में शिरकत करने के लिए जाते थे। मेहनत की बड़ी आदत थी। उन्होंने बड़ी हिम्मत से हमेशा काम किया है। उनकी बेटी कहती हैं कि वफ़ात के बाद मुझे कहा कि मेरे साथ अपनी अम्मी की समस्त चीज़ों के इंतिज़ामों में मदद करो। काम मुकम्मल होने पर इस क़दर शुक्रगुज़ार हुए कि मैं शर्मिंदा होती गई और यह काम करते हुए एक बात बार-बार मुझे कहते थे कि बेटी सब काम जल्दी जल्दी आज ही मुकम्मल कर लो क्योंकि मेरे पास ज़्यादा वक़्त नहीं है। इस वक़्त तो मैंने उनकी बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और फिर ज़्यादा पूछा भी नहीं क्योंकि अपनी ख़्वाबें इत्यादि भी बहुत ज़्यादा नहीं बताया करते थे मगर बाद में भाई ने बताया कि आपने अपने बारे में कोई ख़्वाब देखी थी और कहा था कि मेरा वक़्त अब कम है। वफ़ात से एक घंटा पहले भी सुब्ह नौ बजे से एक बजे तक अपने घर से जुड़े क्लीनिक में मरीज़ देख रहे थे। एक बजे घर आए। वुज़ू कर के मस्जिद मुबारक में नमाज़ पढ़ने का इरादा था। बिस्तर पर बैठ कर जूते उतारते उतारते अचानक उनको मैसेव (massive)हार्ट-अटैक हुआ और अपने मौला के हुज़ूर हाज़िर हो गए

पड़ोसियों से भी प्यार का सम्बन्ध था और पड़ोसी भी उनका बहुत ख़्याल रखा करते थे। शेअरी और अदबी शौक़ भी था। दुर्रे समीन, कलामे महमूद और दुर्रे अदन की नज़्में बड़े तरन्नुम से पढ़ा करते थे। कई कैसेट भी उन्होंने रिकार्ड करवाए। अच्छे शेअर को ख़ूब सराहते थे। इलमी ज़ौक़ रखने वाले थे। सय्यद हुसैन अहमद मुरब्बी सिलसिला हैं, उनके हमज़ुलफ़ भी हैं। वह कहते हैं कि डाक्टर साहिब ने बताया कि जब लंदन से जमाअत की, हस्पताल की ख़िदमत के लिए पाकिस्तान गए हैं और लाहौर से जब ट्रेन पर (रब्वह उतरे तो सीधे प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में चले गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उन्हें अन्दर बुला लिया और फिर उन्होंने जब पूछा कि आ गए? तो उन्होंने कहा जी हुज़ूर हाज़िर हो गया हूँ। तो हज़ूर ने फिर फ़रमाया कि आपका घर मैं ने सफ़ेदी इत्यादि करवा कर बंद कर दिया है आप जाएं और नाज़िर आला से चाबी ले लें और वहां इस में रहें। कहते हैं जब मैं घर गया ,खोला तो अंदर दो चारपाइयाँ पड़ी हुई थीं। फिर मज़ीद चारपाइयाँ जा के उन्होंने अपने लिए खरीदें। घर का सामान लिया और वहां रहने लगे ।कोई नख़रा नहीं था, कोई कुछ नहीं था कि मैं लन्दन से गया हूँ। और पहले साल ही जलसे पर उनके मेहमान आ गए तो जलसे के दिनों में ख़ुद भी पराली पर सोते थे और अपना घर जो था वह मेहमानों को दे दिया। अपने सुसर मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहब की बड़ी ख़िदमत की। अपनी सास की बड़ी ख़िदमत की। हुसैन साहिब कहते हैं कि डाक्टर साहिब बताया करते थे कि मेरे साथी डाक्टर जो बड़े बड़े ओहदों पर फ़ाइज़ थे मुझे पूछते थे कि तुम रब्वह जैसी छोटी सी बस्ती में जो काम करते हो उस का मुआवज़ा तुम्हें क्या मिलता है? कहते हैं मैं जवाब दिया करता था कि लोगों को अंदाज़ा नहीं हो सकता और न ही आप लोग समझ सकते हो कि मैं रब्वह में बैठ कर जो काम कर रहा हूँ उस का क्या मुआवज़ा है। जो दुआएं हैं इस का कोई मुआवज़ा, उस की क़ीमत नहीं है। सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि, हज़रत सय्यदह अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ि की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की वफ़ात के वक़्त इस्लामाबाद में हुज़ूर के पास रहे। इसी तरह उनको और बुज़ुर्गों की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली।

डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ साहिब कहते हैं कि अगर में यह लिखूँ कि ग़रीबों का डाक्टर इस शहर से विदा हो गया तो अतिश्योक्ति न होगी। आपने आधी सदी से अधिक समय इस इलाक़े के ग़रीब, कमज़ोर मरीज़ों की बिना किसी मज़हब तथा मिल्लत के भेदभाव के ख़िदमत की है। आप जब हस्पताल के चीफ़ मैडीकल ऑफीसर थे तो हस्पताल की विभिन्न चाज़ों की ख़रीद के लिए ख़ुद लाहौर जाते।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

मार्कीट से रेट्स (rates)का जायज़ा लेकर अच्छी और मयारी चीज़े ख़रीद कर लाते और अक्सर सारा दिन इस में ख़र्च हो जाता ताहम जमाअत के माल को दर्द और दियानतदारी से ख़र्च करना भी आपका गुण था। हस्पताल में अल्ट्रासाऊंड और इंडो स्कोपी के विभाग का आग़ाज़ भी आपने किया। आरम्भ में पैदल और साईकल पर कई बुज़ुर्ग हस्तियों और सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उनके घर जा कर देखा करते थे, हिदायतें देते थे। फ़ज़ले उम्र हस्पताल के हवाले से कहा करते थे कि ख़ुलफ़ाए अहमदियत की दुआएं उस के साथ हैं और मैंने ईलाज के हवाले से अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यहां बहुत से चमत्कार होते देखे हैं

डाक्टर सुल्तान मुबश्शिर साहिब लिखते हैं कि फ़ज़ले उम्र हस्पताल की ख़िदमत जो लगभग तीस साल पर फैली है। इस दौरान उन पर कई परीक्षाएं भी आईं और ख़ुदा तआला का यह आजिज़ और दरवेश बंदा सिर झुका कर करता रहा और सम्मान से ख़ुदा तआला के हुज़ूर दुआ करता रहा और सुलतान मुबश्शिर साहिब ने यह सही लिखा है। कई बातें मेरे इल्म में भी हैं और मुझे पता है बड़े वक़ार से उन्होंने कोई शिकायत का शब्द ज़बान पर लाए बग़ैर कई मुश्किलें जो पेश आएं या इबतिला जो आए उनको बर्दाश्त किया और फिर अल्लाह तआला ने भी उनको बहुत नवाज़ा और कभी ओहदेदारों के बारे में कोई शिकायत या अपने साथियों के बारे में शिकवा या कोई ज़्यादती कभी दूसरों से वर्णन नहीं की। डाक्टर सुलतान मुबश्शिर साहिब ही लिखते हैं कि मुझे याद है कि सिर्फ अमीरों का या बुज़ुर्गों का नहीं हर एक का ईलाज उनका गुण था जैसा कि बताया गया है। अब डाक्टर सुलतान मुबश्शिर साहिब एक घटना वर्णन करते हैं कि एक बार दोपहर के वक़्त रहमत अली साहिब ड्राईवर की पत्नी एमरजैंसी में आईं। मैंने डाक्टर साहिब को हस्पताल आने की दरख़ास्त की तो कुछ मिनट में अपने घर दारुल-उलूम शर्क़ी से तशरीफ़ ले आए। घर हस्पताल में भी नहीं था। यह मुहल्ला रब्वह के बिलकुल दूसरे किनारे पर है। वहां उनका घर था । वहां से शीघ्र आ गए। जमाअत के वफ़ादार थे। कई बार ऐसा हुआ कि हम नौजवान डाक्टर अपने अफसर की हद से अधिक सख़्तियों से परेशान होते तो हमें बड़े प्यार से बैठ कर समझाते कि हमें हर हाल में निज़ाम की इताअत करनी है और सब्र का मुज़ाहरा करना है

और उनकी अहलिया शौकत साहिबा की जब वफ़ात हुई है तो उस के अगले दिन उनके दो भाँजों की दावत वलीमा थी तो उसी दिन आपने दुल्हा के घर जा के बताया कि मेरी पत्नी की वफ़ात हो गई है मगर आप फंक्शन ज़रूर करें अपने फंक्शन को बंद न करें क्योंकि उनकी पत्नी दुल्हा की जैसा कि मैंने कहा ख़ाला थीं। हुसैन साहिब के दो लड़के दुल्हा थे। दोनों की दावत वलीमा भी थी लेकिन उन्होंने कहा कि आप ज़रूर फंक्शन करें। यह नहीं है कि इस को रोक दें और उनके बेटे डाक्टर महमूद ने कहा कि मैं फिर दावत में नहीं जाता ,घर रहता हूँ। तो उन्होंने कहा नहीं ख़ुदा तआला की रज़ा पर राज़ी रहना चाहिए और इस की नसीहत की और कहते हैं यह कहा कि ऐसे ही अवसरों पर तो इन्सान की आज़माईश है और सब्र और अल्लाह तआला की रज़ा का पता चलता है। फिर बेटे को साथ लेकर बाक़ायदा दावत में भी शामिल हुए और मुहल्ले में इस बात का आयोजन किया कि दावत वलीमा के वक़्त तक वफ़ात की सूचना किसी को न हो अल्लाह तआला उनसे रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। इन बच्चों के माँ बाप ऊपर तले फ़ौत हुए हैं। इन दोनों मियां बीवी की जो नेकियां हैं उनको अल्लाह तआला उनके बच्चों में भी जारी रखे। उनकी माता जैसा कि मैंने कहा बीमार हैं और काफ़ी बीमार भी हैं ।अल्लाह तआला उन पर भी रहम और फ़ज़ल फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 14 फरवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

भलाई के लिए कर रहे हैं। इन्हीं ख़िदमतों में से मैं कुछ एक का वर्णन करता हूँ। जैसे ह्यूमैनिटी फ़रस्ट हमारे देश के देहाती क्षेत्रों में स्कूलों की तामीर और उनमें बुनियादी ज़रूरतों का सामान मुहय्या कर रही है। इसी तरह हाई स्कूल के तीन सौ से अधिक छात्रों के लिए स्कॉलरशिप की सुविधा मुहय्या कर रहे हैं और पूरे देश में निरन्तर मेडीकल कैंप और सर्जरी कैंप आयोजित कर रहे हैं। ज़रूरतमंदों और प्रभावितों के लिए हमारे देश में ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की मौजूदगी निहायत लाभदायक साबित हो रही है।

ह्यूमैनिटी फ़रस्ट उन लोगों के लिए जो क़ुदरती विपत्तियों और आग लगने से प्रभावित हुए हैं ,घरों की तामीर कर रही है। ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की इन समस्त ख़िदमतों पर मैं ख़लीफ़तुल मसीह का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने हमारे देश में इन कामों के लिए मदद की। इस वक़्त ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के अधीन हमारे देश में हस्पताल का मन्सूबा सेहत के विभाग में बुनियादी पत्थर साबित होगा। इस मक़सद के लिए मौजूदा हुकूमत ने ह्यूमैनिटी फ़रस्ट को ROSA UBA BUDO में एक इमारत तोहफ़ा में दी है

आख़िर पर मैं आपको इस बात की यक़ीन दहानी करवाता हूँ कि साओटो मै ऐंड पर निसिप्पे की हुकूमत ह्यूमैनिटी फ़रस्ट और जमाअत अहमदिया के साथ एक मज़बूत और स्थायी दोस्ती रखने की इच्छुक है।

मैं इस अवसर का फ़ायदा उठाते हुए प्रधानमन्त्री की तरफ़ से ख़लीफ़तुल मसीह को दावत पेश करना चाहता हूँ कि आप इस हस्पताल की उद्घाटन आयोजन में शामिल करें जो हमारे लिए बे-इंतिहा इज़्ज़त और फ़ख़र का कारण होगा। आपकी तवज्जा का शुक्रिया!

इस के बाद प्रोग्राम का बाक़ायदा आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय शकील अहमद उम्र साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की और इस के बाद इस का जर्मन ज़बान में अनुवाद किया गया।

उसके बाद 4 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में ख़िताब फ़रमाया। हुज़ूर अनवर के ख़िताब का हिन्दी अनुवाद पेश है

ख़िताब सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद ताव्वुज़ तथा तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :समस्त सम्मान योग्य मेहमानों की ख़िदमत में अस्सलामो अलैकुम। अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें आप पर हों। मैं आप सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो आज हमारे जलसा सालाना में शामिल होने के लिए पधारे हैं। जलसा सालाना ख़ास मज़हबी इज्तिमा है जिसमें अहमदी मुसलमान अपनी रूहानियत, अख़लाक़ीयात और दीनी इल्म बढ़ाने के लिए शामिल होते हैं। यहां जलसा सालाना जर्मनी में अब यह एक रिवायत बन चुकी है कि खासतौर पर मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों के लाभ के लिए एक सैशन रखा जाता है, जिसके लिए हम आज यहां इकट्ठे हुए हैं। आप में से वे मेहमान जो पहले भी यहां तशरीफ़ ला चुके हैं वे तो अहमदियत के अक़ाइद से परिचित होंगे अलबत्ता कुछ नए मेहमान भी हैं जो पहली बार शामिल हो रहे हैं और वह अहमदिया अक़ाइद और शिक्षाओं का परिचय प्राप्त करना चाहेंगे। इन मेहमानों को भी अब यह पता चल गया होगा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक इस्लामी फ़िर्क़ा है जो इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आख़िरी ज़माना के बारे में पेशगोई के अनुसार मानव जाति के सुधार के लिए क़ायम किया गया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह एक क़ुदरती बात है जो ना सिर्फ सैकूलर तन्ज़ीमों पर बल्कि मज़हबी जमाअतों पर भी लागू होता है कि वक़्त गुज़रने के साथ साथ एक ख़ास अक़ीदा या जमाअत के मानने वाले अपनी असल और बुनियादी शिक्षाओं और अक़ाइद से हटना शुरू हो जाते हैं। इस के नतीजा में इन सारी जमाअतों में एक वक़्त ऐसा आता है कि उन्हें पुन: ज़िन्दा करना पड़ता है वर्ना धीरे-धीरे वह अपना असल वजूद खो बैठती हैं या ऐसी शक्ल धारण कर लेती हैं जिस की उनके असल से कोई समानता बाक़ी नहीं रहती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमारा अक़ीदा है कि जब मज़हबी जमाअतों के साथ ऐसा मामला पेश आता है तो अल्लाह तआला की आदत यह जारी है कि अल्लाह तआला सिलसिला की असल शिक्षाओं को ज़िन्दा करने के लिए अपने चुने हुए फ़िरिस्तादों को भेजता है ताकि वे लोगों का सुधार कर सकें और उनकी असल शिक्षाओं और अक़ाइद की तरफ़ रहनुमाई कर सकें। जहां तक इस्लाम का सम्बन्ध है तो इस बारे में से हमारा अक़ीदा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आख़िरी शरई नबी हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मबऊस हुए और फिर उन्नीसवीं सदी के आख़िर में इस्लाम की असल शिक्षाओं और

अक़ीदों के पुन: उद्धार के लिए अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक की सूरत में एक मुस्लेह भेजा जिसने वास्तविक इस्लाम सिखाया और इस पर अनुकरण किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: हम अपनी जमाअत के बानी को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और महदी (अर्थात हिदायत पाने वाली) मानते हैं और आपका सबसे अहम मक़सद इस्लाम की असल शिक्षाओं का पुनरुद्धार और मानव जाति को दोबारा अल्लाह तआला की तरफ़ वापस लेकर आना था। अपनी जमाअत के इस संक्षिप्त परिचय के बाद अब में दुनिया की मौजूदा हालत के बारे में कुछ करूंगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह हर इन्सान की फ़ितरत है वह आज़ादी, ख़ुद-मुख़तारी और आराम से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है। शान्तिप्रिय और सन्तोष जनक ज़िन्दगी की इच्छा जो हर किस्म के झगड़ा से पाक हो, एक क़ुदरती बात है। हर एक चाहता है कि वह शान्तिप्रिय और सुरक्षित जगह पर रहे। हर एक चाहता है कि इस का गांव, क़स्बा या शहर सुरक्षित हो और बराबरी वाला हो। हर किसी की इच्छा है कहा का देश शान्तिप्रिय, फलने फूलने वाला और ज़िन्दगी की सविधाओं से जुड़ा हो। अत: लोग यही चाहते आए हैं कि सारी दुनिया शान्तिप्रिय हो। परन्तु अमन की इस फ़ितरत की इच्छा के बावजूद सच यह है कि मतभेद तथा फ़साद और झगड़े दुनिया के हर हिस्सा में फैल चुके हैं। ऐसे देश भी हैं जो आपसी जंग की वजह से पिस चुके हैं। बुराई फैलाने वाले गिरोह एक दूसरे या हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। कुछ देशों में सूबों और विभिन्न क्षेत्रों के बीच बहुत दुश्मनी उनके अपने समाज का अमन तबाह कर रही है। इस के अतिरिक्त इन देशों में जहां बहुत अधिक संख्या में से मुहाजरीन आ गए हैं वहां स्थानीय और नए आने वालों के बीच तनाव नज़र आने लगा है। टूट-फूट का शिकार समाज पहले ज़्यादा विभाजित हो रहा है और बड़ी तेज़ी से इस स्थान पर पहुंच रहे हैं जहां किसी भी वक़्त वो तनाव की वजह से तबाह हो सकते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया विश्वव्यापी सतह पर देखें तो प्राय देश ताक़त और क़ब्ज़ा प्राप्त करने के लिए एक दूसरे से मुक़ाबला कर रहे हैं। भौगोलिक, स्यासी तथा आर्थिक बरतरी को प्राप्त करने के लिए या विभिन्न इक़दार और अक़ीदों के लोगों को अपनी मर्ज़ी के अनुसार ढालने के लिए अन्याय पूर्ण जंगें लादी जा रही हैं। उदाहरण के तौर पर अपना ग़लबा क़ायम रखने और विरोधी देशों की तरक़्क़ी को रोकने के लिए आर्थिक और व्यापारिक जंगें शुरू हो चुकी हैं। इसी तरह यह कि दुनिया रिवायती ख़ूनी जंगों से घर चुकी है जिन में दूसरी क़ौमों को कुचलने और उनकी अगली नस्लों का भविष्य अन्धेरा करने के लिए व्यापक स्तर पर तबाही फैलाने वाले हलाक करने वाले हथियार इस्तिमाल किए जा रहे हैं।

हम अपनी दौलत ताक़त की हवस में आजकल की नौजवान नस्ल का भविष्य एक न ख़त्म होने वाली नाइंसाफ़ी और ज़ुलम तथा अत्याचार के द्वारा बड़ी बेरहमी से तबाह कर रहे हैं। ख़ौफ़ और परेशानी वाली बात यह है कि जिस चीज़ को आज हम देख कर रहे हैं और यह किसी भी वक़्त एक विश्वव्यापी दुर्घटना का आरम्भ बन सकती है जिसके नतीजे हमारे विचार से बहुत उच्च होंगे। संक्षिप्त यह कि दुनिया का शायद ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जिसे हम शान्तिप्रिय और लड़ाई झगड़ों से पाक क़रार दे सकें। दुनिया की बड़ी ताक़तें प्राय कमज़ोर देशों को अपनी मर्ज़ी के अनुसार ढालने के लिए अपनी ताक़त और दौलत का इस्तिमाल करती हैं। यहां तक कि तुलनात्मक कमज़ोर देश भी ताक़तवर देशों की सहायता की वजह से क्षेत्र में अपना प्रभुत्तव क़ायम रखने के लिए अपने पड़ोसी देशों के साथ बे-इंसाफ़ी का सुलूक करते हैं। इस के साथ साथ दहशतगर्द गिरोह अपने घृणित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अत्याचार और क़तल की राह धारण करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :इसी तरह कुछ तथा कथित मज़हबी संस्थों दौलत और ताक़त जो कि उनका असल मक़सद होता है प्राप्त करने के लिए मज़हब का नाम धोखा से इस्तिमाल करती हैं और उग्रवाद को जायज़ क़रार देती हैं। फिर इंतिहाई दाएं बाज़ू वाले यूरोप और सारी दुनिया में अमन के लिए बड़ा ख़तरा बनते जा रहे हैं। दाएं बाज़ू वाले आजकल क़ौम परस्ती के नाम पर बहु सभ्यता वाले और बहुत क़ौमों वाले समाज को ख़त्म करके इस पर अपनी भावनाओं को द्वेष और नस्ली भेद पर आधारित दृष्टिकोण हावी करना चाहते हैं। अपनी क़ौम की शनाख़्त बचाने और उसे बाहरी विचारों से पाक रखने के लिए कुछ द्वेषी लोग ऐसे मुहाजिरीन को बुरी तरह निशाना बना रहे हैं जो कई दशकों से इन देशों में शान्तिप्रिय तरीक़ा से रह रहे हैं और एक उदाहरण योग्य शहरी होने के नाते इस देश की बेहतरी के लिए कोशिश कर रहे हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कुछ देशों या गिरोह व्यक्तिगत लाभों के लिए इन्साफ़ और अख़लाक़ीयात के बुनियादी उसूलों को छोड़ते हुए और दूसरों की परवाह किए बिना दुनिया की आर्थिक मंडियों और कारोबार पर क़ब्ज़ा जमाने का काई अवसर हाथ से नहीं जाने देते। संक्षेप में जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ कि झगड़े सारी दुनिया पर छाए हुए हैं और समाज की हर सतह पर देखे जा सकते हैं। इसलिए हमारी अमन की फ़ितरती इच्छा के बावजूद हम बिलकुल इसके विपरीत हालत देख रहे हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं दुनिया की ख़राब होती हुई अवस्था के बारे में पिछले कई सालों से बता रहा हूँ लेकिन अब तो दूसरे लोग भी दुनिया में मौजूद असुरक्षा तथा भय के बारे में अपनी फ़िक्र का इज़हार करने लगे हैं। अब मैं कुछ भौगोलिक सियासत के माहिरीन, स्यासतदानों और समीक्षतों के इस बारे में वर्णन प्रस्तुत करूंगा जो अब खुले आम इस ख़तरा का इज़हार कर रहे हैं और दुनिया के अमन और सुरक्षा को क़ायम रखने के लिए शीघ्र क़दम उठाने और सुधारों की ज़रूरत पर ज़ोर दे रहे हैं। उदाहरण के तौर पर न्यूयार्क टाईम्स के एक वर्तमान कालम में फ़रेंकोयस डेलेटर जो कि यू एन ओ में फ्रांस के राजदूत हैं लिखते हैं सिक्योरिटी कौंसिल में मेरे पिछले पाँच सालों के तजुर्बा के बाद मैंने इस कड़वी हक़ीक़त को जाना है कि दुनिया प्रति दिन ज़्यादा ख़तरनाक और ग़ैर यक़ीनी अवस्था का शिकार होती जा रही है। हमारी नज़रों के सामने दुनिया में टैक्नोलोजी के इन्क़िलाब और चीन के ऊपर आने की वजह से ताक़त का पैमाना तबदील हो रहा है और हम यह भी देख रहे हैं कि बड़े देशों के बीच मुक़ाबला में वृद्धि हो रही है। हम अब दुनिया में एक नया फ़साद देख रहे हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बड़ी ताक़तें बज़ाहिर दयालुता का मुज़ाहरा करते हुए दुनिया के मौजूदा निज़ाम को क़ायम रखने या एक नया और बेहतर निज़ाम क़ायम करने की कोशिशें कर रही हैं लेकिन इस के विपरीत यहां एक सीनीयर पश्चिमी राजनीतिज्ञ जो विश्वव्यापी सम्बन्धों और सियासत को बड़ी अच्छी तरह जानते हैं खुले आम स्वीकार करते हैं कि ये समस्त ताक़तें दुनिया को एक नए फ़साद की तरफ़ लेकर जा रही हैं। फ्रांसीसी राजदूत और अधिक कहते हैं कि हर किस्म का वैश्विक तंगी क़ाबू से बाहर निकल सकती है। ऐसा ही हमने सीरिया में देखा और ज़रूरत है कि हम ईरान , उत्तर कोरिया और जुनूबी चीन के मामला में ऐसी अवस्था पैदा ना होने दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यद्यपि यह ठीक है कि शाम और ईरान मुसलमान देश हैं लेकिन उत्तर कोरिया और जुनूबी चीन द्वीप के झगड़ों में लिपित देशों का तो इस्लाम से कोई भी सम्बन्ध नहीं। इसलिए यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकता कि दुनिया का फ़साद का केन्द्र मुसलमान या मुस्लिम देश ही हैं, जैसा कि प्राय समझा जाता है। इस कालम में फ्रांसीसी राजदूत दुनिया में अमन की स्थापना के लिए यूरोप के प्रमुख भूमिका का भी ज़िक्र करते हैं। वह लिखते हैं कि मेरा दृढ़ यक़ीन है कि यूरोप की तारीख़ी ज़िम्मेदारी है और इस योग्य भी है कि दुनिया की विभिन्न ताक़तों के बीच सन्तुलन क़ायम रखने के लिए अहम किरदार अदा कर सके। यह यूरोप की ज़िम्मेदारी है कि वह दुनिया को आपस में मिलाने और दुनिया की ताक़त में सन्तुलन क़ायम करने के लिए अपना किरदार अदा करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कुछ समय पहले में एक जर्मन राजनीतिज्ञ से मिला जो ऐसी संस्था के लिए काम कर रहे थे जिसे जर्मन हुकूमत ने पनाह लेने वालों और स्थानीय लोगों के बीच सम्बन्ध मज़बूत करने के लिए क़ायम किया था। मैंने उन्हें बताया था कि इन समस्याओं का हल सिर्फ़ जर्मनी या किसी एक रियासत के बस में नहीं है बल्कि अगर वह दुनिया में स्थायी अमन की इच्छा रखते हैं तो समस्त योरुपी देशों को एक साथ हो कर काम करना होगा। एक वर्तमान कालम में प्रोफ़ैसर Nouriel Roubini जो कि क्लन्टिन के दौर में वाईट हाऊस में विश्वव्यापी आर्थिकता के माहिर थे अमरीका और चीन के सम्बन्धों के बारे में लिखते हैं कि विश्वव्यापी सतह पर चीन और अमरीका के बीच सर्द जंग के नुक़्सान अमरीका और रूस के मध्य होने वाली सर्द जंग के मुक़ाबला पर कहीं होंगे। प्रोफ़ेसर Roubini और अधिक लिखते हैं कि बड़े पैमाने पर सर्द जंग दुनिया की विश्वव्यापकता को ख़त्म करने का आरम्भ बन सकती है या कम से कम दुनिया को आर्थिक लिहाज़ से दो अलग ब्लॉक्स में तक़सीम कर देगी। दोनों अवस्थायों में व्यापार,सरमाया कारी,नौकरियां,टैक्नोलोजी और डेटा बुरी तरह सीमित हो कर रह जाएगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह कालम वैश्विक ताक़तों की व्यापारिक जंग के नुक़्सानदेह पक्षों पर रोशनी डालता है। यद्यपि कुछ दिन पहले चीन और अमरीका के मध्य एक मुआहिदा हुआ है लेकिन देखते हैं कि यह कितना कामयाब रहता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यद्यपि कि यह

व्यापारिक जंगें ग़ैर माक़ूल और बिना किसी सोच समझ के हैं लेकिन मेरा सबसे बड़ा ख़ौफ़ यही है कि शायद ऐटमी जंग शुरू हो जाएगी। इस जंग के ख़ौफ़नाक नतीजे इन्सानी सोच से बड़े हैं और अगली आने वाली नस्लों तक फैलने वाले होंगे। अब तो दूसरे लोग भी इस ख़तरा का इज़हार कर रहे हैं। ब्लूमबर्ग प्रोफ़ैसर Tyler Cowen जो कि जॉर्ज मेसन यूनीवर्सिटी में आर्थिकता के प्रोफ़ैसर हैं लिखते हैं कि आज की दुनिया की एक बहुत ही कडवी हक़ीक़त यह है कि नौजवान लोग ऐटमी जंग के नुक़्सान से आगाह नहीं। मौसमयाती तब्दीली बड़ा भय समझा जा रहा है जबकि ऐटमी जंग भूतकाल का ख़तरा समझा जा रहा है। इस के विपरीत मेरे निकट ऐटमी जंग आज भी दुनिया का सबसे बड़ा मसला है। बेशक यह ख़तरा कई बार इतना ज़्यादा दिखाई देता।

वह और अधिक लिखते हैं कि कुछ छोटे देशों ने ऐटमी हथियार प्राप्त कर लिए हैं और दूसरे देश इसे प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। इस तरह ऐटमी जंग का ख़तरा निरन्तर बढ़ रहा है। वह बड़े विश्वास से लिखते हैं कि सिर्फ एक देश के ऐटमी मिज़ाईल चलाने से ही दुनिया की हालत हमेशा के लिए बदल जाएगी

Duetsche-Welle में छपने वाले एक हालिया सर्वे के अनुसार जर्मन लोग जिस मसला के बारे में ज़्यादा फ़िक्रमंद हैं वह मौसम की तबदीली है लेकिन मैं ज़ाती तौर पर ऊपर वर्णित प्रोफ़ैसर साहिब की राय से सहमति करता हूँ कि आज का सबसे बड़ा मसला जंग,विशेष रूप से ऐटमी जंग का है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इसी साल जर्मन के भूतपूर्व वज़ीर ख़ारजा Sigmar Gabriel ने भी ऐटमी हथियारों के फैलाओ के बारे में अपनी चिन्ताओं का इज़हार किया है। उन्होंने बताया है कि अमरीका,चीन और रूस ऐटमी मैदान में अपने प्रभुत्व को क़ायम करने के लिए अब एक नई ऐटमी दौड़ में शामिल हो चुके हैं और ऐन मुमकिन है कि अमरीका और रूस अपने ऐटमी मिज़ाइल यूरोप में नसब करें तो इस अवस्था में युरुप के देशों का बराबर नुक़्सान होगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इसी तरह अमरीका और ईरान के बीच हालात बहुत ख़राब हो रहे हैं और बड़ी संभावना है कि उनके बीच जंग छिड़ जाए। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि अमरीका और ईरान के बीच होने वाली जंग कोई मज़हबी जंग होगी और यह स्पष्ट उदाहरण होगा कि किस तरह ऐसी अत्याचार से लाखों इन्सान की ज़िन्दगी दाव पर लगती है। सियासी समीक्षक बताते हैं कि अगर अमरीका और ईरान के बीच जंग शुरू हुई तो फिर इस से सिर्फ ये दो देश ही प्रभावित नहीं होंगे बल्कि उस के प्रभाव बाक़ी देशों तक भी फैलेंगे। निसन्देह जर्मनी और दूसरे देशों भी इस जंग के तबाह करने वाले प्रभावों से हिस्सा लेंगे। इसलिए जर्मन हुकूमत और दूसरे योरुप के देशों को लाज़िमी इस अवस्था को हल करने के लिए प्रभावी किरदार अदा करना होगा। इसी तरह यह कि वैश्विक आर्थिकता के बोहरान के दस साल गुज़र जाने पर यूरुपी देश यह न समझें कि उनकी क़ौमी आर्थिकता सुरक्षित हैं या पूंजीवादी निज़ाम तरक़्क़ी कर रहा है। यहां तक कि पश्चिमी माहेरीन आर्थिकता भी इस माली निज़ाम की कमियों की निशानदेही कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर एक प्रसिद्ध व्यक्ति Paul Kearns हाल ही में आर्थिकता के एक रिसाला में छपने वाले कालम में लिखते हैं कि हम सब पूंजीवादी निज़ाम से फ़ायदा उठा चुके हैं मगर अब इस निज़ाम में सुधारों की ज़रूरत है ताकि यह सक्रिय हो सके। उसे मुनाफ़ा की बुनियाद पर ही नहीं बल्कि मुआशरती क़दरों के अनुसार चलाना होगा। इसलिए पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अब धीरे-धीरे कमज़ोर हो रहा है और लोग महसूस करने लगे हैं कि इस में ख़तरे और नाइंसाफ़ियां छुपी हुई हैं। इसलिए योरुप के देशों और दूसरे ताक़तवर देशों को अंहकार करते हुए यह नहीं समझना चाहिए कि उनका निज़ाम हमेशा चलता रहेगा बल्कि उन्हें इस बात को यक़ीनी बनाना होगा कि दुनिया का आर्थिक निज़ाम बराबरी और इन्साफ़ के सहारे खड़ा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक और चिन्ताजनक मसला जो यूरोप में अविश्वास की फ़िज़ा बरक़रार रखे हुए है Brexit और उसके नतीजा में पैदा होने वाली परेशानियों का है। हाल ही में Duetsche Welle ने Brexit के यूरोप पर होने वाले प्रभावों की समीक्षा की है। रिपोर्ट में ज़िक्र किया गया है कि Hard Brexit के नतीजा में सबसे ज़्यादा जर्मनी प्रभावित होगा और इस की टैक्नोलोजी और कार इंडस्ट्री बड़े पैमाने पर प्रभावित होगी। सिर्फ जर्मनी में ही लाखों का रोज़गार ख़त्म हो सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक और मसला जो सारी दुनिया और विशेषत: जर्मनी में चिन्ता का विषय है,इमीग्रेशन और स्थानान्तरण है। इस मसला पर यद्यपि विभिन्न राए हैं मगर हक़ीक़त यह है कि इमीग्रेशन आर्थिकता की तरक़्क़ी के लिए एक अहम ज़रूरत है। Bertelsmann फ़ाउंडेशन की वर्तमान तहक़ीक़ के अनुसार जर्मनी में काम के लिए बुनियादी लोगों की क़ुव्वत को पूरा करने के लिए हर साल दो लाख साठ हज़ार लोगों को इस देश में लाने की ज़रूरत है। रिपोर्ट इस बात का ज़िक्र करती है कि अगर इमीग्रेशन का अनुकरण शुरू न किया गया तो लोगों की बढ़ती हुई उम्र के कारण जर्मनी में लोगों की क़ुव्वत 2060 तक एक तिहाई रह जाएगी या फिर 16 मिलियन लोगों की कमी हो जाएगी। इसलिए पनाह लेने वालों के देश की समस्त समस्याओं की जड़ क़रार देना बिलकुल अन्याय पूर्ण है बल्कि सच यह है कि इमीग्रेशन के बिना बहुत से अमीर पश्चिमी देश बहुत ख़तरा में हैं। हक़ीक़त यह है कि समस्त देशों एक दूसरे पर भरोसा करते हैं और अब हम एक जुड़ी हुई वैश्विक दुनिया में रह रहे हैं। इसलिए बजाय रूकावटें खड़ी करने और दूसरों से अलग होने के यह ज़रूरी है कि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले लोग एक दूसरे से सहयोग करें और साझा फ़ायदा के लिए मिलकर कोशिश करें। हुकूमतों को चाहिए कि इस मक़सद के लिए बाक़ायदा मन्सूबा तैय्यार करें और इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि देश एक दूसरे के साथ मिलकर काम करें और स्थानीय सतह पर मुहाजरीन को समाज का हिस्सा बनाने के लिए उनकी मदद की जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मशरिक़ वुसता में अवस्था कई दहाईयों से इंतिहाई नाज़ुक और भयावह है। इस्राईल और फ़िलस्तीन के मध्य मुज़ाकरात के नतीजा में होने वाले असंख्या शान्ति सन्धियां नाकाम हो चुकी हैं। हाल ही में अमरीका और उसके सहयोगियों ने एक नया अमन का मन्सूबा तय्यार किया है और इस से पहले कि इस का बाक़ायदा ऐलान किया जाता उस के बारे में शंकाओं का इज़हार शुरू हो गया है। इसी तरह सियास्तदान और माहेरीन कह रहे हैं कि नया मन्सूबा नाइंसाफ़ी पर आधारित है इसलिए यह कोई मक़सद प्राप्त नहीं कर सकेगा Gerard Araud जो कि यू एन ओ में फ्रांस के राजदूत थे,उन्होंने रिटायरमैंट से पहले कहा कि इस मन्सूबा की नाकामी तलगभग यक़ीनी ही थी। इसलिए कि दुनिया का अमन विभिन्न कारणों की वजह से तबाह हुआ है जैसा कि कुछ स्यासी हुकमरानों और देशों की एक तरफ़ा पालिसियां जो जाती और क़ौमी लाभों को बराबरी और भाईचारा के उसूलों से ऊपर रखते हैं। ऐसी नाइंसाफ़ी उन्हें कभी भी अमन और तरक़्क़ी की तरफ़ नहीं ले जा सकती। विभिन्न तहक़ीक़ें और मज़ामीन जिनका मैंने उद्धरण दिया है स्पष्ट करते हैं कि दुनिया में अमन और सुरक्षा की कमी का क़सूर किसी मज़हब का नहीं निकाला जा सकता चाहे वह इस्लाम हो या कोई और। बल्कि कई इक़तिसादी , भौगोलिक , सयासी और आर्थिक समस्याएँ ऐसी हैं जो दुनिया के अमन को बर्बाद करने में अहम किरदार अदा कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तारीख़ के इस नाज़ुक मोड़ पर मेरा यह दृढ़ यक़ीन है कि हमारे दौर की बड़ी समस्याओं के ख़ात्मा का सिर्फ एक ही तरीक़ा है, सिर्फ एक ही रास्ता है जो हमें नजात की तरफ़ ले जा सकता है और हमें इस दुनिया में जंग तथा लड़ाई से छुटकारा दिला सकता है और वह रास्ता अल्लाह तआला का है। अमन, ताक़त और माल के द्वारा क़ायम नहीं होता बल्कि अमन तो ख़ुदा तआला की ज़ात में है। अत: यह वक़्त की ज़रूरत है कि मानव जाति अपने ख़ालिक़ को पहचाने।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

चाहता है कि मानव जाति जो कि सर्व श्रेष्ठ जाती है अमन के साथ ज़िन्दगी बसर करें और एक दूसरे के अधिकार अदा करें। इसलिए क़ुरआन करीम जो कि इस्लाम की पवित्र किताब है और इस्लाम के आदेशों का प्रथम स्रोत है , हमारे अक़ीदा के अनुसार यह किताब अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल की जिसे हम आख़िरी मज़हबी शरीयत मानते हैं जो क़यामत तक क़ायम रहेगी। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि जब दुनिया के हर हिस्सा में तफ़र्रुक़ा और अशान्ति फैलती है तो इस की बुनियादी वजह इन्सान और इस के ख़ालिक़ के बीच दूरी का पैदा होना है। ऐसे वक़्तों में जब दुनिया तबाही की तरफ़ बढ़ रही हो तब अल्लाह तआला अपने रहम की वजह से अपने बर्गुज़ीदा प्रतिनिधि मबऊस करता है जो इन्सानियत को मज़हब की तरफ़ वापस लेकर आते हैं। पहले वक़्तों में अंबिया अपने लोगों की रहनुमाई करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में आए फिर हमारे अक़ीदा के अनुसार अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक वैश्विक शरीयत के साथ सब इन्सानों की रुहानी और आचरण के सुधार के लिए भेजा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जैसा कि मैं आरम्भ में बता चुका हूँ कि हम अहमदी मुसलमान इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि इस ज़माना में अल्लाह तआला ने दुनिया के सुधार के लिए अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक को मुस्लेह बना कर भेजा ताकि आप मानव जाति को हिदायत दें और इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं पर रोशनी डालें जो बहुत समय से भुलाई जा चुकी थी। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसलिए आए कि मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों को दिखला दें कि इस्लाम एक अमन , भाईचारा , और दोस्ती का मज़हब है और यह कि ख़ुदा तआला ने यह इन्सानियत के लिए चाहा कि वह अमन में रहे और अपने ख़ालिक़ और एक दूसरे के अधिकार अदा करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि अल्लाह तआला के अधिकार की अदायगी उस वक़्त तक नहीं हो सकती जब तक उस की मख़लूक़ के अधिकार अदा न किए जाएं। क़ुरआन करीम तो यहां तक कहता है कि इन लोगों की इबादतें जो अल्लाह तआला की मख़लूक़ के अधिकार अदा नहीं करते बेफ़ाइदा हैं और अल्लाह तआला उन्हें रद्द कर देगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा है कि वह अल्लाह तआला के साया में पनाह लें ताकि वह हर किस्म की जंग और ख़तरा से सुरक्षित रहें। इसी तरह आप अलैहिस्सलाम ने यह सचेत भी फ़रमाया कि अगर लोग अपने ख़ालिक़ को पहचानने में नाकाम हुए तो यह बड़ी ख़तरा की बात होगी। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बावजूद अपनी ताक़त और दौलत के न यूरोप , न अमरीका , न एशिया , न आस्ट्रेलिया , न द्वीपों और न ही दुनिया के दूसरे इलाक़े तबाही से बचेंगे। अत: मेरी दिली दुआ है कि इन्सानियत अपने ख़ालिक़ को पहचाने और इस की तरफ़ रुजू करे बजाय उस के कि वह इस भौतिक दुनिया , उस की कशिशों और इस के आरामों को ज़िन्दगी का आख़िरी मक़सद समझ लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे मज़बूत उम्मीद है और मेरी दुआ है कि लोग अपने ख़ालिक़ और अपने साथियों के बारे में अपने कर्तव्य समझ जाएं ताकि यह दुनिया वह सुकून वाली जन्नत बन जाए जिसकी हम सब इच्छा रखते हैं। मेरी दुआ है कि हम उन लोगों के लिए जो हमारे बाद हैं एक अच्छा नमूना छोड़ें ताकि आने वाली नस्लें अमन के साथ रह सकें न यह कि वे उनमें से हों जो लड़ाईयों को और अधिक बढ़ाने वाले हूँ। मतभेद डालने वाले हों और ऐसे हों जिनकी तरक़्क़ी और कामयाबी के रास्ते बंद हूँ। मेरी दुआ है कि समस्त काले बादल जंग और दुश्मनी के जो हमारे सिरों पर मंडला रहे हैं हट जाएं और उनकी जगह अमन और तरक़्क़ी का स्थायी नीला आसमान दुनिया के हर हिस्सा पर रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस से पहले कि बहुत देर हो जाए अल्लाह तआला इन्सानियत को अपनी तरफ़ झुकते हुए आने वाली तबाही से बचने की तौफ़ीक़ दे आमीन। आख़िर में एक बार फिर आप सब का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने हमारे प्रोग्राम में शामिल की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 5 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

ग़ैर अहमदी अरब मेहमानों की हुज़ूर से मुलाक़ात

आज शाम प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाले वफ़दों की मुलाक़ात का प्रोग्राम था। 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मुलाक़ात हाल में पधारे और सबसे पहले कुछ ख़ास अरब मेहमानों पर आधारित एक ग्रुप ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस ग्रुप में सियास्तदान , अरब उलमा , पत्रकार और विभिन्न हुकूमती संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल थे।

यह ग्रुप 11 लोगों पर आधारित था जिसके मुखिया मुहम्मद अल-हबश साहिब थे। महोदय इस्लामी स्कॉलर हैं और सीरियन पार्लीमेंट के मैंबर रहे हैं। और सीरिया के प्रसिद्ध इमामों में से हैं। इस वक़्त अबी ज़हबी यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ैसर के तौर पर काम कर रहे हैं। इसी तरह मिस्र , साऊथ अफ्रीक़ा , स्वीटज़रलैन्ड , अबू ज़हबी और मालटा में विभिन्न संस्थाओं , कमेटियों के एडवाइज़र और मैंबर हैं। महोदय मुहम्मद अल-हबश साहिब की पत्नी आसमा कफ़तार साहिबा भी उनके साथ थीं। महोदया सीरिया के प्रसिद्ध मुफ़्ती Ahiyad Kaftarou की साहबज़ादी हैं। इसके इलावा मुहम्मद सलामा Halaiqah भी इस वफ़द में शामिल थे। महोदय उर्दन मेंमिनिस्टर आफ़ स्टेट , मिनिस्टर आफ़ इंडस्ट्री ऐंड ट्रेड, और मिनिस्टर आफ़ नैशनल इकॉनोमी रह चुके हैं। इसी तरह डिप्टी प्राइम मिनिस्टर फ़ार इकॉनोमिक अफेयर्ज़ भी रह चुके हैं। आजकल हुकूमती स्तर पर विभिन्न संस्थाओं के चेयरमैन और मैम्बर हैं।

एक मेहमान मरवान फ़ाओरी साहिब थे जो उर्दन के प्राइम मिनिस्टर के एडवाइज़र हैं। इसी तरह उम्मान के मेयर के भी एडवाइज़र हैं

इस ग्रुप के एक मैंबर अहमद Alromoh साहिब ऑस्ट्रिया से आए थे। महोदय इस्लामिक स्कॉलर हैं और डायरेक्टर इन मिडल ईस्ट स्टडीज़ हैं।

एक दोस्त मुहम्मद नफीशा साहिब भी शामिल थे। महोदय इस्लामिक स्कॉलर हैं।

वलीद Falion साहिब जर्मनी में निवासी हैं। महोदय सीरिया के सदर के एडवाइज़र रहे हैं।

सुलेमान अलहमूद साहिब आस्ट्रिया से आए थे और इस ग्रुप में शामिल थे। यह भी इस्लामिक स्कॉलर हैं

मुहम्मद ज़ाहिद गुल तुर्की से आए थे। महोदय जर्नलिस्ट हैं और एक तुर्क अख़बार के सम्पादक हैं। विभिन्न अरबिक चैनल्ज़ पर अरबिक स्पूक्स परसन भी हैं

एक मेहमान डाक्टर हिशाम साहिब थे जो यू एन ओ जैनवा (स्वीज़रलैंड)में हियूमन राईट्स कमेटी के सदर हैं।

जर्मनी से एक अरब डाक्टर Abed Alsalam Dwyhi भी शामिल थे जो कि चाइल्ड स्पेशलिस्ट हैं।

इस वफ़द के मेंबरों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया और हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में इस बात का इज़हार किया कि हमें जमाअत अहमदिया से मिलकर और उनके जलसा सालाना में शामिल कर के बहुत ख़ुशी हुई है। बहुत से मामलों को अपनी आँखों से देखने और बहुत सी ग़लत-फ़हमियों को दूर करने का अवसर मिला। इसी तरह विभिन्न विषयों पर जमाअत के बारे में हमारे इल्म में इज़ाफ़ा हुआ है। वफ़द के साथ विभिन्न मामलों पर बातचीत हुई।

वफ़द के विभिन्न मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के ग़ैर मुस्लिम मेहमानों से ख़िताब की बहुत प्रशंसा की और कहा कि इस में हमारे बहुत से सवालों का जवाब आ गया है। वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में परामर्श पेश किया कि हमें कुछ इस्लामी संस्थाओं की तरफ़ से जमाअत अहमदिया के बाईकॉट का बहुत दुख है जिसकी आधार पर कुफ्र का फत्वे जारी हुए। इस बारे में अपना शरई और अख़लाक़ी फ़र्ज़ समझते हुए यह परामर्श पेश करना चाहते हैं कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोगों के साथ अन्य इस्लामी फ़िर्क़ों के लोगों की मुलाक़ात कराई जाए जिसका लक्ष्य कफ्र के फतवों को ख़त्म कर के आपसी सम्मान तथा सहयोग पर आधारित नए दौर का आरम्भ करना है। इस के लिए अहले सुन्नत जमाअत के कुछ उलमा और जमाअत अहमदिया के उलमा के मध्य बातचीत का प्रबन्ध किया जाए जिसके बाद एक ऐसे साझा लक्ष्य तक पहुंचना है जो सब के लिए स्वीकार योग्य हो और बुनियादी मुशतर्का अक़ीदों पर सहमति हो। इसी तरह यह भी परामर्श है कि यह कान्फ्रैंस उम्मान या क़ाहिरा या इस्तंबोल में आयोजित की जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क्या आपने शीया लोगों को इस में रखा है। वफ़द के मुखिया ने कहा कि नहीं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनको भी शामिल करें बल्कि अन्य भी सब फ़िर्क़ों को शामिल करें। सबका प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दूसरे जो आप उलमा की बातचीत करवाना चाहते हैं इस से मुराद अगर मुनाज़रा है तो फिर कामयाबी मुश्किल है। हाँ अगर हर एक फ़िर्क़ा को सिर्फ अपने विचारों का इज़हार करने का अवसर दिया जाए और दूसरों पर आरोप या उनके साथ मुनाज़रा करना मक़सद न हो तो फिर ठीक है। अगर मुनाज़रा है तो फिर उस का कोई फ़ायदा नहीं। हाँ अगर यह जानना है कि अहमदियत किया है तो फिर ठीक है।

इस पर वफ़द ने कहा कि हमारा मक़सद यही है कि हर एक अपना विषय प्रस्तुत करे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपको अपनी कोशिशों का केन्द्र यह बनाना चाहिए

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 27 February 2020 Issue No.9

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

कि जो व्यक्ति कलिमा तय्यबा पढ़ता है या ख़ुद को मुसलमान कहता है किसी दूसरे को उसे काफ़िर कहने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में यह फ़रमाया है कि تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ कि दूसरे धर्मों को यह पैग़ाम देते हैं कि आएं इस बात पर इकट्ठे हो जाएं कि हमारा ख़ुदा एक है। तो मुसलमान आपस में क्यों नहीं इकट्ठे हो सकते जबकि हम सब का एक ख़ुदा है। एक नबी है और एक कुरआन है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आपका जो आईडिया है आपके जो भावनाएं हैं इस से मैं ख़ुश हूँ लेकिन यह मुश्किल काम है। आपको विपक्ष का सामना करना पड़े गा। अरब मुसलमान फ़िर्क़ों को इकट्ठा करना है तो उस के लिए पोलेटिकल वैल्यू होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुसलमानों के विभिन्न फ़िर्क़े हैं लेकिन सब मुसलमान होने के बावजूद भी एक नहीं हैं। सब का कलिमा एक है नबी एक है क़ुरआन एक है लेकिन फिर भी एक नहीं बनते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कुछ कहते हैं कि हमारा क़ुरआन विभिन्न है जबकि ऐसा नहीं है। एक ही क़ुरआन है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :दुनिया में हम अकेली कम्यूनिटी हैं जिन्हों ने क़ुरआन करीम का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया है और ये सब ओपन है। हमारे अक़ीदे हर एक जानता है। सबको पता है। हमारा सब कुछ खुला है। क़ुरआन करीम की कुछ आयतों की व्याख्या में फ़र्क़ है। हमारी और है। आपकी और है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि पाकिस्तान में जो हमें ग़ैर मुस्लिम क़रार दिया गया है इस में लिखा है For the purpose of law and constitution you are not Muslim अर्थात क़ानून और नियम के उद्देश्यों को हल करने के लिए आपको not muslim कहते हैं। क़ुरआन तथा हदीस के अधार पर नहीं कहते बल्कि क़ानून और नियमों की वजह से ग़ैर मुस्लिम समझते हैं।

वफ़द के मेंबरों ने दरख़ास्त की कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी तरफ़ से कोई प्रतिनिधि मुक़र्रर फ़र्मा दें जिसके साथ बैठ कर हम अगले स्तर के लिए बातचीत कर सकें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर उम्मत वाहिदा नहीं बनती तो आप जो भी कर लें उस का कोई फ़ायदा ना होगा। बाक़ी आपका जो भी परामर्श है और जो भी प्रोग्राम है वह लिख कर भिजवा दें तो फिर मैं बताऊंगा कि क्या करना चाहिए क्या strategy होनी चाहिए।

एक मैंबर ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर के सम्बोधन में अल-क़ूदस के बारे में से बात नहीं हुई। वहां पर फ़लस्तीनियों की शख़्सियत को भी ख़त्म किया जा रहा है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमने तो सबसे पहले फ़लस्तीनियों के हक़ में आवाज़ उठाई थी। चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो ने उनके झगड़ा की रक्षा की था। दरअसल मुसलमान ख़ुद मुत्तहिद नहीं हैं। ग़ैर हुकूमतों से मदद लेकर अपने मुसलमान देशों के ख़िलाफ़ इस्तिमाल कर रहे हैं। जब यह बड़ी ताक़तों से मदद लेते हैं तो फिर वे ताक़तें अपनी बात मनवाती हैं। मुसलमानों की कोई सामूहिक शक्ति नहीं है। फिर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :हम अफ़्रीक़ा में आप लोगों की मदद कर सकते हैं। आपके साथ मिलकर काम कर सकते हैं। अफ़्रीक़ा में हम मैडीकल कैम्पस का आयोजन करते हैं। इसी तरह शिक्षा विभाग, सोलर अनर्जी , साफ़ पानी की प्राप्ति और कुछ देहातों का च्यन कर के उनको डेवलप कर रहे हैं। इसके इलावा और भी बहुत से प्रोजेक्ट और काम हैं जो कर हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :हम तो हमेशा के लिए ओपन हैं। आप भी अगर ओपन हैं तो हम आप का स्वागत है।

वफ़द में शामिल एक औरत ने कहा कि हुज़ूर अनवर का औरतों में ख़िताब बहुत ज़बरदस्त था जिसमें हुज़ूर अनवर ने औरत और मर्द के कन्धा से कन्धा मिला कर तालीम तथा तर्बीयत के काम करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया था। इस आधार पर मैं उम्मीद करती हूँ कि अगले साल औरतों को मर्दों में ख़िताब करने की इजाज़त दे दी

पृष्ठ 1 का शेष

को इस आयत में एक उदाहरण देकर सचेत किया जाता है कि जब तक ग़मरह दूर ना हो तो स्पष्ट रूप से काम नहीं हो सकता और वे बुद्धि वाले नहीं कहला सकते। क़तल इस लिए फ़रमाया कि वह रहम की जगह है। मानो वह कर्ता भी ख़ुद ही हैं। अपने आपको ख़ुद हलाक किया। कुछ आदमियों में ख़र्रास होने का माद्दा होता है। वे बद्धि और दूर अंदेशी से काम नहीं लेते, बल्कि कुधारणा और अटकलों से काम लेते हैं और वे इसी में अपना कमाल समझते हैं। मेरा उद्देश्य यह था कि अख़लाक़ के हिस्सा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण नमूना पेश करूँ। जो एक सम्पूर्ण इन्सान थे। इस के बाद अलग अलग रूप से आपके अख़लाक़ से हिस्सा लिया गया। किसी ने एक लिया और दूसरे ने कोई और। और एक को दूसरे में ग़मरह हो गया। जिस तरह किसान के लिए ज़रूरी है कि वह इस ग़मरह को दूर करे वर्ना उस का नतीजा दूसरे पौधों पर अच्छा नहीं होगा। इसी तरह हर एक इन्सान को ज़रूरी है कि वे अपने अंदरूनी ग़मरह को दूर करे वर्ना अंदेशा है कि दूसरे अच्छे गुणों को भी ना ले बैठे।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 114 से 117 प्रकाशन क़ादियान)

☆ ☆ ☆

जाएगी।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि औरतों के ख़िताब औरतों में होते हैं। हम क़ुरआन सुन्नत के अनुसार औरतों के समस्त अधिकार का ज़िक्र करते हैं और इस पर अनुकरण करते हैं। अगर आपकी मुराद हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा के सहाबा को आधा धर्म सिखाने से है तो उन्होंने आधा धर्म हिजाब के पीछे रह कर सिखाया था।

इस वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 8 बजकर 55 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया

(शेष.....)

☆ ☆
☆

शादी ब्याह के मौक़ा पर

बेपर्दगी और फोटोग्राफी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं

"जब दूलहा आए और चाहे वह ग़ैर ही क्यों न हो महिला की औरतें इस से पर्दा करना ज़रूरी नहीं समझतीं और कहती हैं इस से क्या पर्दा है और फिर सिर्फ यही नहीं कि पर्दा नहीं करतीं बल्कि इस से मखौल (मज़ाक़) और हंसी करती हैं।'

(ख़ुतबात महमूद, भाग 3, पृष्ठ 71)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"जो बुराइयां राह पकड़ रही हैं उनमें से एक बेपर्दगी का आम रुझान भी है जो यक़ीनन शरीयत के आदेशों की सीमाओं के फलांगने के क़रीब हो चुका है और शादी वालों की इस मामला में बेहिसी को भी ज़ाहिर करता है क्योंकि सम्मान्नीय मेहमानों में बहुत सी पर्दा करने वाली औरतें होती हैं बेधड़क एण्ट संट फोटोग्राफरों या ग़ैर ज़िम्मेदार और ग़ैर मुहर्रम मर्दों को बुलाकर तस्वीरें खिंचवाना और यह परवाह न करना कि यह मामला सिर्फ ख़ानदान के क़रीबी हलक़े तक ही सीमित है इस बारे में स्पष्ट तौर पर बार-बार नसीहत होनी चाहिए कि आपने अगर अंदरून ख़ाना कोई वीडियो इत्यादि बनानी है तो पहले मेहमानों को बता दिया जाए और सिर्फ सीमित ख़ानदानी दायरे में ही शौक़ पूरे किए जाएं।

(दैनिक अलफ़ज़ल रब्वह, किताब "बद रस्मों तथा बिदअतों और उनसे बचने के बारे में शिक्षाएं प्रकाशन रब्वह ,पृष्ठ 60)

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad